

ਭਿਸ਼ੀਗੁਰਵ ਨਮ:॥ ਭਿਸ਼ਮੇ ਵਿਖਾਨੁ॥ ਭਿਸ਼ਮੇ ਮੁਰਸਾਧ॥
 ਭਿਖਮਧ ਮਮਧ ਧੋਖਾਂ ਕਾਧੰ ਮਮੁਤੁ ਮੇਲਾ ਵਿਧਿਤੁ ਧਿਤੁ ਭੁਤਿਤੁ
 ਚੂਟੇਤੁ ਧਿੰ ਧੁਵੀਮਿ ਸਿਧੋਲਿਤੁ ਮਾ॥ ਚਕਰਿ ਗਧਧਾ ਸੈਵੀ ਨੀਲਾਧ
 ਧਾਸਮਲ ਨਧਾਨਪਿ ਮਮਧਿਨਾਮ ਨਾਨਾ ਦਾਨਿ ਨੁਮਾਨਹਿਕਾ
 ਰਿਧਾਮ॥ ਮਥੇ ਧਾਮ ਧਰਮੁ ਨਾਂ ਗੁਰਾਨੁ ਨਾਮਪਿ ਮੁਧਮਾ
 ਸਤਿਗੁਰੁ ਪ੍ਰਗਿਤਾਨਾਂ ਗੁਰੁ ਨਾਨੁ ਧਿੰ ਨੀਲਿਧਾਮ॥ ਨੀਲਧਾਨੁ
 ਗੁਰਮਨੁ ਨੁਲਾ ਸਿਧਾਨੁ ਪਲਨਾਧਿਨੀ ਧਰੁ ਨਿਨਾਧਿ ਮੰਮੁ
 ਜਾਨੁ ਗਿਰੁਧਾਨਿ ਚਕੁ ਮਾਨੁ॥ ਗੁਰਮਧੁਰੇ ਧੁ ਧਥਾ॥ ਮੰਨੇ ਮਧੰ
 ਧਾਨੁ ਗਵੰ ਚਕੁ ਮੇਧਮ ਮਧੁਧਾ: ਸਾਨੁ ਲਸਕੁ ਨਾਨੁ ਸਾ ਵਿਲਾ
 ਧਾ ਮਥਮਨੁਲਾ॥ ਗੁਰੁ ਸੁਤਿ ਰਨਾ ਪਾਠਾ ਮਥੇ ਨੇਵੀ ਸਤੁ
 ਵਗੀ ਨਿਧਿ: ਮੁਖਜਲਾ ਪੁਗਾ ਨਾਗੀ ਵਿਨਾਸੁ ਗੁਰਮਮਾ॥

ਸੋਰੁ.
 ੦

कमुगिका नदिधलं प्रपुमिदुर कण्डनमा उधुल उधु
ल गिलाः कयमपानुके उषा लेनं मयुधुं लोरो येग
धुं मिताधुगमा ननुं लेनिउं धुं कयुं उधुमगविस॥
मेवेधरीः धुकासु यवारवुन गुरुवः किदिः मधुम
धुं मोगनुं उधुलकमा॥ येधु पवीउं उलं उलं उलं
कधुगिका मिपमवंधलं मीनिं मधुके कलिकानिस॥
मिगेमलुं ववधुं उषागेषु मधुके॥ गीउवधुनि यधु
मधुवमनीनि कययउ॥ यधुमधु उधुमधु गुरुः मेव
लये वमिग उधुधुमि वधुमि मेकनु मेयेउउः॥
मधुमगमयेधु धुगधुमि धुलपयउ धुकागमउ
कयसं धुलमधु धुनययउ॥ यधुधुनि यधुमधु

۱۱

॥ ५ ॥

[illegible]

六

सन्ने॥ ह्रीं भुज॥ गुण॥ श्री वीरठभुवचमः॥ मि
 न्ने॥ लं॥ अषिष्टै र्गं॥ रिसुयचमः॥ सु॥ ह्रीं
 वन॥ रानकयचमः॥ उरके॥ हं॥ लं॥ वं
 भवतुम हृष्टै चमः॥ भवतुष्ट॥ उ॥ रि॥ हृष्ट॥ सु॥ ह्रीं॥
 उ॥ रि॥ हृष्ट॥ न॥ गु॥ द॥ उ॥॥ हिं॥ गु॥ क॥ द॥ न॥॥ पु॥ वे॥
 लं॥ सु॥॥ लं॥ वै॥॥ प॥॥ व॥॥ उ॥॥ रं॥॥ गु॥॥ हिं॥ गु॥ क॥ द॥
 न॥॥ सु॥॥ सु॥ व॥॥ हं॥ हं॥ उ॥ हृ॥ द॥ य॥ सु॥ सु॥
 रि॥ सि॥ वि॥ अ॥ प॥ स॥ नु॥ ये॥ भ॥ व॥ न॥ न॥ के॥ न॥ नु॥ ठ॥ वि॥
 उ॥ हृ॥ सि॥ व॥ ल॥ य॥॥ लं॥ भ॥ व॥॥ हं॥ हं॥ सु॥ य॥॥ हं॥ हं॥ य॥ म॥॥
 हं॥ हं॥ वै॥ र॥ उ॥॥ हं॥ हं॥ व॥ न॥॥॥ हं॥ हं॥ व॥ न॥॥॥ हं॥ हं॥ ज॥ यी॥ र॥॥

世

[illegible]

सं.
५

ॐ ह्रीं ध्यायेत् ॥ ध्यायेत् कलिल ॥ ॐ वसिष्ठ वसः ॥
ॐ गङ्गायै ॥ ॐ मेधाध्यायै ॥ ॐ सङ्गाय ॥ ॐ सङ्गा
विष्टाय ॥ ॐ भद्राङ्गाय ॥ ॐ सिद्धिं वसः ॥
ॐ यमसङ्गाय ॥ ॐ भद्राङ्गाय ॥ ॐ
यमसङ्गाय ॥ ॐ कङ्गाय ॥ ॐ उपसङ्गाय ॥
ॐ ध्यायेत् ॥ ॐ भद्राङ्गाय ॥ ॐ भद्राङ्गाय
य ॥ ॐ ॥ ॐ ध्यायेत् ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ
ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ध्यायेत् ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ
ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ध्यायेत् ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ
ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ध्यायेत् ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ

ਖੁਏਗੇਗੁੰਗਦੀਤੁ ਮਖੁਰਾਮੁਰੁ ਲਠਿਮਰੁ ਤਾਲ
ਨਾਮੁਰਾ ਕਾਨ੍ਹਾਤੁ ਵਿਖੀ ਸੁਣਕਾਏ ॥ ਬਣਤੁ:
ਸਿਖੇਗੀ ॥ ਭਿਕਨੁ ਮੁਖਯਯ ॥ ਭੁਤੁ ਸਿਖੇਗੀ ॥
ਉਤਰਾਸ ਮੁਖੁ ਮੁਲਕਯੇਗੀ ॥ ਵਾਗਾਸੁ ਅਰੁ
ਨਿਠੰ ਗੋਰੁ ਵਰੁਤੁ ਯੋਗੁ ਲਮਾ ਕੁਲਪਾਸਰੰ ਵਿਖ
ਕਾਂਤੁ ਮੁਖਯਾਮੁਰੇ ਗੀ ॥ ਭੁਤੁ ਬਣਤੁ ॥ ਸੁਪਮਧ
ਤੁਤੁਤੁ ਭੁਤੁਗੀ ॥ ਭੁਤੁ ਮੁਤਾ: ਪਿਸਾਸਾਸੁ ਰਾਸੁ
ਮਾਸੁ ਮਗੀਮ ਪਾ: ਸੁਪਮਧਤੁ ਤੁਮਬੇ ਲੋਕਮੁਲੁ
ਤੁਗੀਤਾ: ॥ ਮਖੁਰਾਮੁਰੁ ਯੋਗੇਰਾ ਵਾਗਾਸਮੁਖਯਾਮੁਖ
ਮੁਖੇਗਾਤੁਰੰ ਭੋਇਕੋਠਿ ਮੁਲਕਯੇਗੀ ਪਾਸੁ

गेहल निवृत्तुगिन्ठे मगविप्रविवाह केटिकठिः
 सस निवृत्तुव जेदाग ॥ उते प्रलेवकर सुवि विराय
 निवृत्तुव जेदाग ॥ विवृत्तुल मुद्रया नदेमाल
 धु ॥ वसक प्रगक जेमुके सधल नदेगु ववाधु
 वव विमलीकरल निवृत्तुल नदेगु ल वगनि
 ठा ॥ विराय ॥ ववृत्तु माल वृत्तु जेदाग ॥
 उवा धुट प्रकाल धुत्तु यामिः ॥ विन वसक
 केगमि वमः ॥ उवृत्तु धुत्तु ववृत्तु वृत्तु मधु व
 मृत्तु काले यवृत्तु माल वाम धुत्तु वदिः मि
 धुत्तु ॥ वि व प्रगक केगमि वमः ॥ उवृत्तु धुत्तु
 धुत्तु ववृत्तु मधु वमाल धुत्तु ववृत्तु काले य

सं.
 ५

वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ पुनस्तथेति ॥ ॐ नमो भगवते
 केशव ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
 ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
 ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
 ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
 ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
 ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
 ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥

ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
 ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
 ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥

+
 स्वविपरीतवृत्तः॥ भक्तलच्छुरकं भुक्ति ॥ विष्णु
 नं ह्युत्तमः॥ स्वयं गीर्वाण वक्त्रे॥ नं भक्तिरुत्तमः॥
 येनमः॥ व दामभक्तवत्तुष्टाय॥ रं स्वयं रक्तवत्तु
 य॥ यं तुष्टयवत्तुष्टाय॥ नं रं सान्नभुवनमः॥
 उत्तिरुत्तिरुत्तिः॥ नं भक्तिरुत्तमः॥
 पञ्चिमे॥ व दामभक्तवत्तुष्टाय॥ उत्तमः॥ रं स्वयं रक्तवत्तुष्टाय॥
 यं तुष्टयवत्तुष्टाय॥ पुष्टे॥ नं रं सान्नभुवनमः॥
 उत्तिरुत्तिरुत्तिः॥ नं भक्तिरुत्तमः॥ भक्तिरुत्तमः॥
 भक्तलच्छुरकं॥ व रं रक्तवत्तुष्टाय॥ दामभक्तवत्तुष्टाय॥
 तुष्टे॥ रं तुष्टयवत्तुष्टाय॥ स्वयं रक्तवत्तुष्टाय॥
 सान्नभुवनमः॥ तुष्टयवत्तुष्टाय॥ भक्तिरुत्तमः॥
 भक्तिरुत्तमः॥ रं सान्नभुवनमः॥ भक्तिरुत्तमः॥

सुप्रसन्नचित्तः
 दीप्तिगुणवत्तुष्टाय
 स्वयं रक्तवत्तुष्टाय
 भक्तिरुत्तमः॥
 भक्तिरुत्तमः॥
 भक्तिरुत्तमः॥

कलत्राभः॥ तिलं भिक्षुं भिक्षुं वामकुर्यात्॥
 न भूषणं न कुर्यात्॥ न कान्तं न भिक्षुं॥ न
 भूषणं न भूषणं॥ न न भूषणं वामकुर्यात्॥ न न
 भूषणं न भूषणं॥ न न भूषणं वामकुर्यात्॥
 न भिक्षुं न भूषणं॥ न भिक्षुं न भूषणं॥
 वं भूषणं वामकुर्यात्॥ वं भूषणं न भूषणं॥
 वं भूषणं कुर्यात्॥ वं भूषणं वामकुर्यात्॥ वं न भूषणं
 न भूषणं॥ वं भूषणं वामकुर्यात्॥ वं भूषणं
 न भूषणं॥ वं भूषणं वामकुर्यात्॥ वं भूषणं
 न भूषणं॥ वं भूषणं वामकुर्यात्॥ वं भूषणं
 न भूषणं॥ वं भूषणं वामकुर्यात्॥ वं भूषणं
 न भूषणं॥ वं भूषणं वामकुर्यात्॥ वं भूषणं

कवण्ट

平

3

[illegible]

सुखैर्यवमः॥ विहंगलैर्यवमः॥ धनैः॥ भिमंगलैः॥ रुचैः॥ भयवम
कैः॥ रुचैः॥ भयवमैः॥ गुरु॥ विकंगलैः॥ वरु॥ विहंगलैः॥ हनि॥ मिपियकनैः॥ कठ॥
कपल्लीमैः॥ वरु॥ सुकंगलैर्यवमः॥ भवि॥ +

कः सुवतुसकुमुयकण॥ कि सुविलुपुसकुवेरुहै॥ कि

सुवतुसकय॥ कु सुवगिरिपुमिपः॥ की कुपुमिगम॥

कभवल्लुगुहम॥ ककुमुयकण॥ कु वेरु॥ कु कय॥

कु मिप॥ कु मिगम॥ कि कुहमयः॥ कि कुमः सुमुः॥

कु वेरु॥ कु कय॥ कु मिपः॥ कु मिग॥ कु ह्रु॥ य सुमु॥

क वेरु॥ मि कय॥ मः मिपः॥ वमिग॥ कि ह्रु॥ वेण्यप

सं० म॥ य वेरु॥ कय कय॥ कुप मिपः॥ वरु मिग॥ कु ह्रु॥

७ ह्रुः सु॥ ह्रु वेरु॥ ह्रु कय॥ कु मिपः॥ की मिग॥ ह्रु ह्रु॥ +

+ मंगः सुमु॥ मि गे वेरु॥ की गे कय॥ की कु मिपः॥

की मिग॥ कि गे ह्रु॥ कु विहंगलैर्यवमः॥

नीनः सुभुः ॥ गे नं वर ॥ नीनै कप ॥ नीनु वर ॥ मायः ॥
 नीनीमिः ॥ गे नं हस ॥ उ विवरु वल्ल ठः ॥ सुषर
 लगलमः ॥ गः सुभुः ॥ गे नं वर ॥ गे कप ॥ गु मायः ॥
 नीमिः ॥ गे हस ॥ जमः ॥ कः सुभुः ॥ के नं वर ॥
 के कप ॥ गु मायः ॥ कीमिः ॥ के हस ॥ अह ॥ वः सुभुः ॥
 ठा वर ॥ हं कप ॥ ठि कुकुवः ॥ ठा लिट्टे मायः ॥
 सकय मिः ॥ गे हस ॥ हः सुभुः ॥ उ विवरु वल्ल ठः ॥ सुषर
 हं सुभुः ॥ गे नं वर ॥ हं कप ॥ गु मायः ॥ नीनीमिः ॥ गे हस ॥
 नी कप ॥ हं भवमकुये मायः ॥ नी भवमकुये मायः ॥
 मिः ॥ हं विमल सुव भवमकुये मायः ॥ हं सुभुः ॥
 + विवरुः ॥ वः सुभुः ॥ गे नं वर ॥ गे कप ॥ गु मायः ॥ नीमिः ॥ गे हस ॥ यनमः ॥ +

सुवममि ९ वरुहं ॥ भजल्लय कवसः ॥ भुग्पुत्रय
 मापः ॥ विष्णवे मिग्मे ॥ विवमे हसः ॥ विह्रीमी ह्रीमः
 भुज सुभुयः ॥ विह्रीमी भवतुः ॥ पविमि विवि वरुहयः ॥
 ॐ भव भवगति भुक्ते कवः ॥ ॐ सविमं भवतु मापः ॥
 ॐ भवकामधु भवमेठगृमयि विमि ॥ विह्रीमी
 लक्ष्मि भजल्लय हसः ॥ ह्रीमी भोः विह्रीमी सुभुः ॥
 ह्रीमी भकलह्री वरुहं ॥ ह्रीमी जमकलह्री कवसः ॥
 ह्रीमी काण्वलह्री मापयै ॥ ह्रीमी विह्रीमी मिग्मे ॥
 ह्रीमी मीह्री लीविमोः हसयः ॥ भोः सुभुः ॥ लीविमः ॥
 वि कवः ॥ भोः मापः ॥ लीमिग्मे ॥ वि हसयः ॥ ॥ सुभुः
 पद सुभुयः ॥ कैवर्षी वरुहं ॥ कुलवर्गी सुगी वरुहं वरुहं ॥
 नमः

सं.
 ०

भक्तप्रियुगैरवी कव०॥ भोः सिपा०॥ ल्ली सिग्मे०॥ ति ह्रस्०॥
यै सुभु०॥ गा नैरु०॥ रुः कव०॥ वं सिपा०॥ ह्री सिग्मे०॥ ति ह्रस्०॥ रुन
समय ०:०: भुक्त सुभुय०॥ उक्तेरगवति नैरुहै०॥ यस्मिन् - वनवत्
समकुंवा कव०॥ यक्तेरयमभुपदिउं सि०॥ सिपा०॥ किं मुपिधि
सिग्मे०॥ ति उतिधुपुनध ह्रस्०॥ ह्र०॥ भक्तलसत्रुभविनि सुभु०॥
भवपमभुधिगुगिलि नैरुहै०॥ भक्तलसत्रुगिगिधुल्लैस -
सन्तवि कव०॥ विधमैपपुयपुसमनि सिपा०॥ विवग
भक्तल सिग्मे०॥ ति धग्मदंमिनि ह्रस्०॥ ह्रः सुः सुभु०॥ सगिका
ह्रंमूं नैरु०॥ ह्रंमूं कव०॥ ह्रंमूं सिपा०॥ ह्रींमूं सिग्मे०॥
ह्रींमूं ह्रंमूं ह्रस्०॥ ह्र०॥ ह्रींमूं सुभुय०॥ सगिका नैरु०॥
नैरुगवट्टै कव०॥ भः सिपा०॥ ल्ली सिग्मे०॥ ति ह्रीं ह्रस्०॥ सगिका

सुवमेदि ९ वरुं. ॥ भजल्लाय कवरा. ॥ भुगपउय
 माप. ॥ विप्लेये सिग्मे. ॥ ठि वमे हूर. ॥ ठि ह्रीं मी ह्रीमः
 भुज सुभुय. ॥ ठि ह्रीं मी भवतुः पयिभे मिनि वरुं यय. ॥
 ॐ भवे भवगउ भुजु प कव. ॥ ॐ सठिमउं पूयन्तु माप. ॥
 ॐ भवकाम पूरु भवमेठगु मयि वि सिग्. ॥ ठि ह्रीं मी
 न्ति भजल्लाय हूर. ॥ ह्रीं मी भोः तं ली ह्रीं मी सुभुः ॥
 ह्रीं मी भकल ह्रीं वरुं. ॥ ह्रीं मी जम कल ह्रीं कवरा. ॥
 ह्रीं मी काणं ल ह्रीं मापयै. ॥ ह्रीं मी ठि ह्रीं मी सिग्मे. ॥
 ह्रीं मी मी ह्रीं ली तं भोः हूरय. ॥ भोः सुभुः ॥ ली वरुं. ॥
 तं कव. ॥ भोः माप. ॥ ली सिग्मे. ॥ तं हूरय. ॥ ॥ सुभुः
 पार सुभुय. ॥ कै वी वरुं. ॥ कुलवगी सुगी वरुं वं पय. ॥
 नमः

सं.
 ०

भक्तप्रियुगैव कवः॥ भोः सिद्धः॥ लीं सिद्धः॥ लिं ह्रः॥
यै सुभूः॥ गं नैः॥ नः कवः॥ नं सिद्धः॥ ह्रीं सिद्धः॥ लिं ह्रः॥ न
समयः००ः भूत सुभूयः॥ उक्तगवति नैः॥ यमिसुं - वनन
समं कवः॥ यक्तयमभुपदिउं सिद्धः॥ किं सुपिधि
सिद्धः॥ लिं उक्तिपुत्रक ह्रः॥ ॥ भक्तलसुभुविनि सुभूः॥
भवपसुं धिगुगिलि नैः॥ भक्तलसुगिगिह्रल्लि -
सल्लि कवः॥ विधमैपुपुसमनि सिद्धः॥ विवग
भक्तल सिद्धः॥ लिं धर्मदंमिनि ह्रः॥ ह्रः सुः सुभूः॥ सगिक
ह्रं सुं नैः॥ ह्रं नैः कवः॥ ह्रं सुं सिद्धः॥ ह्रीं नैः सिद्धः॥
ह्रीं नैः ह्रं नैः ह्रः॥ ॥ ह्रीं नैः सुभूयः॥ सगस्यै नैः॥
नैः नैः कवः॥ भः सिद्धः॥ लीं सिद्धः॥ लिं ह्रीं ह्रः॥ सगस

भगवन्महः सुभुः॥ वगुगुगुगुगु॥ वगुगुगुगु॥ भोः मिमः॥
 लीमि॥ लिं ह्र॥ १॥ गगुगुगुगुगु सुभुः॥ भोः भग-
 वन्महः॥ लीमि॥ गगुगुगुगुगु॥ लीमि॥ लिं ह्र॥ १॥
 लीं लीं लीं सुभुः॥ कुं कुं नर॥ हं हं कान्तिके हं हं हं-
 कव॥ हं हं मिमः॥ कुं कुं मिम॥ लीं लीं लीं ह्र॥ १॥
 हं हं सुभुः॥ कुं कुं नर॥ लीं लीं लीं कव॥ हं हं-
 ममि॥ कान्तिके मिमः॥ कुं कुं मिम॥ लीं लीं लीं ह्र॥ १॥
 हं हं सुभुः॥ हं हं नर॥ भूमी कव॥ भूमी मिमः॥
 भगवन्महः॥ लिं कुं कुं ह्र॥ १॥ कुं कुं सुभुः॥
 सुभुः॥ हं हं हं नर॥ भगवन्महः॥ कव॥
 सुभुः॥ भूमी मिमः॥ लीं मिम॥ लिं ह्र॥ १॥ भूमी मिमः॥
 विषयं सुभुः॥

ममममममम विमयैवमविमिः॥ वेषपुणनमः सुमुय॥
 य वेरुहे॥ ठैरवा कय॥ कुप मिम॥ वरु मिर॥ कमरुममलवयुं
 हन॥ ॥ ॥ हः सभु॥ ह्रीं वेरु॥ ह्रीं कय॥ ह्रीं मिम॥
 ह्रीं मिर॥ ह्रीं हन॥ ॥ यमहेरुगुमुयवमः॥ ववम-
 नवमुहय॥ मिममिरुहयय॥ मः उरुनध वरुय॥
 व रंसनमुह॥ उरुनध ठनः॥ य पमिमवयुय॥
 य उरुनध वरुयवमः॥ मिममिरुहययनमः॥ मः प्रवयुय॥
 व उरुनध वरुयनमः॥ य सभुय॥ व वेरुहे॥ मि कय॥
 मः मिम॥ व म मिर॥ उ हन॥ ॥ ठ वृत्तवीर॥ ॥
 उरुनधमः सुवनवउरुनधमः॥ पूणउरुनधयवमः॥
 धनयेः॥ धनधउ॥ महे॥ विमयिउ॥ उयेः॥ कलउ॥ गृह॥

ॐ
 ॐ
 ॐ
 ॐ

ॐ
०९

[illegible]

उरुने सुमुद्रुयवमः॥ विहृउ॥ सिवउ॥ पूगतिउ॥ पुनव
 उवुयवमः॥ उरुने मुद्रकलः॥ तिमरीसिकलयेवमः॥
 रुनिवीक॥ प्रभूक॥ उपिवीक॥ उगपिवीक॥ धम्मवीक॥
 जवृयक॥ उरुवडीक॥ सउगमक॥ भुगमक॥ धम्म
 गहक॥ उरुमरिणीकलयेवमः॥ सुवमेमकलः॥
 पुषकलयेवमः॥ यमक॥ सुमवमक॥ पूतिक॥ पूति-
 करीक॥ पतिक॥ पतिकरीक॥ मु॥ मेमूक॥ मरीसिक॥
 सुमुमरिणीक॥ ससिवीक॥ हसुउक॥ लसुकीक॥
 कायक॥ मंपुल्लभल्लक॥ समउक॥ सुववदि-
 कलः॥ प्रभूकलयेवमः॥ वीलगुउक॥ कपिलक॥
 विमुलिङ्गिवीक॥ रुनाक॥ उरुवडीक॥ जवृयक॥
 कपु॥ वरिणीक॥ रीसूक॥ मंदरिणीक॥ सुतिः मंपुल्ल॥

[illegible]

व

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ. मि. सिप। ॐ. भु. भु.
 + कर्मलमनवयं वरुणपतिगवायविषयाम्भारवः॥ ति ह्रीं मायेनेष्टैर्विष्णवे
 भुम्भारवः॥

[illegible]

मः मिषः । तं कवः । स्त्री नेरेः । गुहकान्तिके स्त्री भुजः । मनुः ॥

वसुवसुय.

४३८

子

०५

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं म कलठयदंगी नमः ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं
 ह्रीं मिरः ॥ ह्रीं मिरः ॥ ह्रीं कवः ॥ ह्रीं वरुः ॥ ह्रीं : मरुः ॥ ॐ ह्रीं
 निवर्ति कलठि पत्रये द्रुल नमः ॥ ॐ ह्रीं धृति ध्रु कलठि प
 त्रये विष्णु वनमः ॥ ॐ ह्रीं पितृ कलठि पत्रये नमः ॥ ॐ ह्रीं
 मरु कलठि पत्रये गं मरु गयनमः ॥ ॐ ह्रीं मरु गीता कल
 ठि पत्रये मरु मिर गयनमः ॥ ॐ ह्रीं मरु पुननमः ॥ ॐ ह्रीं पम पुन ॥
 वल्ल पुन ॥ ॐ ह्रीं वरु पुन ॥ ॐ ह्रीं वरु पुन ॥ ॐ ह्रीं कल पुननमः ॥
 ॐ ह्रीं पितृ यद्रु मः ॥ ॐ ह्रीं पितृ यद्रु मः ॥ ॐ ह्रीं पम य ॥
 मरु य ॥ मरु य ॥ ॐ ह्रीं पितृ यद्रु मः ॥ ॐ ह्रीं वरु य ॥ ॐ ह्रीं मरु य ॥
 मरु य ॥ ॐ ह्रीं पितृ यद्रु मः ॥ ॐ ह्रीं वरु य ॥ ॐ ह्रीं मरु य ॥
 मरु य ॥ ॐ ह्रीं पितृ यद्रु मः ॥ ॐ ह्रीं वरु य ॥ ॐ ह्रीं मरु य ॥

ॐ ह्रीं
 ॐ ह्रीं
 ॐ ह्रीं

हम व कलसे

[illegible]

कल्पनिर्वाणः कल्पनीमः

३



[illegible]

हे गवकल्लस

百

五

सिद्धिन्दीना

[illegible]

योगमनुवाय॥ क० १ नमः १ मनु १ ठप १ ठेवठप वामनय
 भवकादधममवमेतुतेमुज्ज कुरुयायवमः॥ तिष्ठ
 मियमिववमः मिर॥ ति मिवकुरुय नुनलिष्टे मुज्ज मियः॥
 मिवगुरुके भवगुरुः भवगुरुमपगगिरिगुरुमा सुवगुये
 भवगुरुं कवसं पिङ्गलं गुरुमा॥ सुयानि पिङ्गल भव
 कवस मिवगुरुया कुरुयवनु १ पुन १ ककि १ मुस १
 वरुण १ वरुणपम वरुणमवि भमसगीरमनु पूविष्ट सवसुपलस
 भवगुरुमुमुय १ कुंठला कवसायकं ॥ तिष्ठ १ मुग १
 मग १ मग गगुवगुप १ वप १ पूसा १ कद १ वम १ वरु १
 मगय १ कुंठला मगुयकला॥ सुवगुपाङ्गके भवगुरुमा॥
 मिवगुरुकामिनं भवं मिवगुरुव पूवगुते मिवय मिवगुरुय
 मिवः भवं पूवगुयगु १॥ ति गंसवः भवविष्टावामीष्टः

सं.
 ०१
 लस

भवकुतः वृद्धापि पतिवृद्धेः पतिपतिवृद्धमिवैवमनुभवमिवैव
तिष्ठुं श्रमेययुक्तं कृतं ॥ भवपुत्रयवमः सिरः ॥
रंसावयुक्तं साधः ॥ तिष्ठुल्लविमः कृतं कवः ॥ तिष्ठुं
भनमेने कृतं सुभयः ॥ तिष्ठुनयविमं भनमेवयपीमदि
उन्ननः प्रोन्नयः ॥ तिष्ठुनयभनमेने कृतं ॥ तिष्ठुः भुक्त
सिरः ॥ तिष्ठुवः भुक्त साधः ॥ तिष्ठुः भुक्त कवः ॥ तिष्ठुमे
सुभयः ॥ तिष्ठुमेने कृतं सुभयः ॥ तिष्ठुमेने कृतं सुभयः ॥
मेवेने वममेने कृतं पतिः ॥ तिष्ठुमेने कृतं ॥ कवमेने कृतं
सिरः ॥ तीमतीपतिमवविष्टु कृतं पतिमविष्टु कृतं
साधः ॥ श्रमेययुक्तं कृतं कवः ॥ तिष्ठुमेने सुभयः ॥ तिष्ठु
भयवमेने कृतं सुभयमेने कृतं यवमः कृतं यवमः कृतं वि
कृतं यवमः कृतं विकृतं यवमः कृतं यवमः कृतं यवमः
भवममयवमेने भवममयवमः ॥ तिष्ठुमेने कृतं ॥

वामदेव्या कुंजल सि०॥ भवपूपाय पूजा सिविवाम
 देवसिधेवमः॥ सिधः॥ वामासाग्या कुंजल कव०॥
 उरुमेकल सुमुय०॥ ति महेरुतं पूषणमि महेरुत
 यवैवमः छेठयेवगिठये छेठामुमं छेठेव ॥ ति महुः
 कामयमुन हन०॥ महुः कामवगपूसाय वमैवमः
 मुन सि०॥ पत्रगुपिल मुन सिधः॥ महेम
 त्रिकुंजल कव०॥ ति कुं ति कुं सुमुयल ॥
 ति कुं कुं वृमपिनेवमः॥ ति कुं कुं लक्ष्मीवाम
 देवयवमः॥ ति कुं विमल लवममुय हन०॥
 कुं भवैवदगुल भुय सि०॥ कुं भवमकुय सिधः॥
 कुं सनवुवल्मुपिल कव०॥ कुं सपगिमिउरे
 लामवेरुहं॥ कुं सप्रिजवदीवकुपिल सुमुय०॥

सं.
 ०७

ॐ ह्रीं ह्रीं : ह्रीं श्रीं लक्ष्मीं नमः ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं : ॥
 ह्रीं श्रीं मिः ॥ ॐ ह्रीं मिः ॥ ॐ ह्रीं कवः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं वेष्टुः ॥
 ह्रीं ह्रीं : ह्रीं ह्रीं : ॥ ॐ नमो विष्णवे भगवते भगवत्पुत्राय
 नमो नमो ॥ ॐ नमो ह्रीं ॥ विष्णवे मिः ॥ भगव
 पुत्राय मिः ॥ भगवत्पुत्राय कवः ॥ ह्रीं नमो नमो ॥ वेष्टुः ॥
 भगवत्पुत्राय ह्रीं ह्रीं लक्ष्मीं भगवत्पुत्राय ह्रीं ॥
 ॐ ह्रीं श्रीं भगवत्पुत्राय भगवत्पुत्राय मिः ॥
 ॐ भगवत्पुत्राय भगवत्पुत्राय मिः ॥ ॐ भगवत्पुत्राय भगवत्पुत्राय कवः ॥
 ॐ भगवत्पुत्राय भगवत्पुत्राय मिः ॥ ॐ ह्रीं भगवत्पुत्राय भगवत्पुत्राय ॥
 ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मीं भगवत्पुत्राय भगवत्पुत्राय भगवत्पुत्राय भगवत्पुत्राय
 भगवत्पुत्राय भगवत्पुत्राय भगवत्पुत्राय भगवत्पुत्राय भगवत्पुत्राय भगवत्पुत्राय
 भगवत्पुत्राय भगवत्पुत्राय भगवत्पुत्राय भगवत्पुत्राय भगवत्पुत्राय भगवत्पुत्राय ॥ ०८

श्री ह्रीं क्लीं तं भोः त्रिं ह्रीं श्रीं भोः तं क्लीं ह्रीं श्रीं
 श्रीं भाया भस्त्रे वाणी परा उरा सिद्धिदा दग्धिदा विजुलमा परा वाणी भवेत्वा भाया नक्षी भद्रवीर
 भवीर धेनुमी परा ॥ उति धेनुमी भवेत्वा ॥ विजुलमा ॥ कापंगलह्रीं दमकदलह्रीं भकलह्रीं ॥ ३ ॥

श्री ह्रीं क्लीं तं भोः त्रिं ह्रीं श्रीं कापंगलह्रीं दमकदल
 ह्रीं भकलह्रीं भोः तं क्लीं ह्रीं श्रीं ॥ ५ ॥ ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं क्लीं
 त्रिं भोः ह्रः ॥ ह्रीं श्रीं त्रिं ह्रीं श्रीं सिः ॥ ह्रीं श्रीं कापंगलह्रीं
 सिः ॥ ह्रीं श्रीं दमकदलह्रीं कः ॥ ह्रीं श्रीं भकलह्रीं
 नेरुह्रीं ॥ ह्रीं श्रीं भोः तं क्लीं ह्रीं श्रीं सुभुः ॥ त्रिं तं क्लीं
 भोः वल्लयेवमः ॥ त्रिं ह्रः ॥ क्लीं सिः ॥ भोः सिः ॥
 त्रिं कः ॥ क्लीं नेरुः ॥ भोः सुभुः ॥ त्रिं तं क्लीं भोः त्रिं
 श्री ह्रीं दमरगभलवयुं भद्रगभलवयुं यगलव- ३
 दमभयुं त्रिं ह्रीं श्रीं त्रिं भोः क्लीं तं कोमसुगैरवायवमः ॥
 त्रिं ह्रः ॥ क्लीं सिः ॥ भोः सिः ॥ त्रिं कः ॥ क्लीं नेरुः ॥
 भोः सुभुः ॥ त्रिं तं क्लीं भोः भद्रगिपुगैरवायुं नक्षीव
 दधुपगवमः ॥

३०

ॐ ह्र०॥ लं० सि०॥ मि०॥ मि०॥ भद्र० पु० ठ० वी० क०॥
 जल० गी० वी० वे००॥ सु० पु० पु० व०॥ सु० पु०॥ लि०
 व० न० य० न०॥ लि० ह्र०॥ लं० सि०॥ लं० मि०॥ नु० क०॥
 ग० वे०॥ यै० सु०॥ लि० उ० पु० पु० किं० पु० पि० पि० य० न० ठ० य०
 म० पु० मि० उ० य० मि० स० म० म० व० उ० न० ठ० ग० व० मि० म० य० ०००॥
 पु० न०॥ लि० उ० पु० पु० पु० ह्र०॥ किं० पु० पि० पि० मि०॥ य० न०
 ठ० य० म० पु० मि० उ० मि०॥ य० मि० स० म० म० व० क०॥ उ० न० ठ०
 ग० व० वे०॥ म० य० ०००॥ पु० न० सु० पु०॥ लि० लं० म०॥
 भद्र० गी० वी० न० ल० यि० उ० पु० न०॥ ह्रं० ह्र०॥ लं० सि०॥ ह्रं० मि०॥
 ह्रं० क०॥ ह्रं० वे०॥ ह्रं० सु०॥ लि० न०॥ भद्र० मि०
 यै० गी० वी० वे०॥ भद्र० मि० मि० म० गी० वे० मि० वे० मि० उ० न०
 न० मि० उ० यै० भद्र० ल० ल० म० न० व० यि० क० यै० ठ० ग० व० म० क० प० न० लि०

गुरुवा छिंदी कुं दं दं को को नमः॥ परमं मिनि निवर्ण
 भानने विधेमे पध्व धूममनि भकल नु रिगुगिधु लै मर
 लनि भवपत्ते मुठिगुगिलि भकल मनु धूममिनि नै वि
 सुगु ९ दम ९ वल्ल ९ नगम रिगय मनु ठि लि लि भम भु
 मनु वा भम ९ पण्डि ९ रिगु लै व ठि वि ९ ठि वि ९ ये न
 उरय ९ के मय ९ उवट्ट वनम भकल म नै गध मनु य ९
 परम कान्ति के ठगवति भन ठै गवतु पण्डि लि रिम
 वगमिउ भकल मनु मनुः धूम उरव वल्ल नै वि भन
 कान्ति कान्त वमिनि कुं कुं धूमि म म नु उर कुं ९
 भुगु भुगु कं छिंदी कुं कुं कुं कुं भुगु ॥ व. ९७. ॥
 परमं मिनि हस. ॥ निवर्ण भानने सिग. ॥ विधेमे पध्व
 धूममनि सिग. ॥ भकल नु रिगुगिधु लै मर लनि कय. ॥

सं.
 ९०

मवापनेमपिउगिनि नरु०॥ भककलमरुधुमविमि मरुः॥
तिह्रीमीहुंहुं सुं सं मरि कये वमः॥ हुं हुं हुं॥ ह्रीं मी
मि०॥ हुं सुं मि०॥ हुं मूं कव०॥ हुं मूं नरु०॥ हुं सुं सुः॥
तिहुं हुं वं वमरु वयवमः॥ हुं हुं॥ ह्रीं मि०॥ हुं मि०॥
हुं कव०॥ हुं नरु०॥ हुं सुः॥ ति ह्रीं ह्रीं मूं सुमये वमः
हुं कं कयये॥ हुं सं मरु०॥ हुं पं मरु०॥ हुं उं
गयये॥ हुं पं पयये॥ हुं यं ययि०॥ हुं सं मरि कये॥
ति ह्रीं लीमः नमठगवतु मरु०॥ ह्रीं भुज०॥ ति ह्रीं हुं॥
लीं मि०॥ मः मि०॥ नमठगवतु कव०॥ मरु०॥ नरु०॥
ह्रीं भुज० सुः॥ ति ति लीमिः वरुवरु वरुगिनिम
भुतैवमः॥ हुं हुं॥ लीं मि०॥ मिः मि०॥ वरुवरु कव०॥

मन्त्रः॥ ॐ गं गी नः विष्णु ऋग्वेदः॥ गं हृ० गी मि० गुं मि० जे कं० गे नं० गः स॥

[illegible]

[illegible]

ॐ ह्रीं श्रीं कृं नमः ॥

विं कुं कुं भक्तकलपुमीर, पुमीर, ह्रीं ह्रीं ध्यान॥ विं ह्रीं ह्रीं ॥ श्रीं श्रीं ॥ कुं माया॥
ह. मि. मि. कय. वर. वर. सुल्ल कय॥ ठगयै वर॥ नमः सुभु॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

भवभाण्डल
विषयो॥ यत्र
५.
३.
५. ३. मि म
५. ५.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

३५

सुखसां भूपयिग ॥ उतिमनुमनुवम ॥ भवदुःखसां भु
भवं भूपयि सुमपुदुलि ॥ नामपुदुमने ॥ वेमक
जडा कगुमनुपुपुविठिहमि भुविम उमकगुमुविठि-
हयकुमे ॥ सुखसां भूपयिग ॥ उतिमनुमनुवम ॥ भवः
भूपयि सुखसां भुविमग ॥ उतिमनुमनुवम ॥ भवः
भुखसां सुखसां उतिमनुमनुवम ॥ भवः सुखसां
भवः सुखसां सुखसां निपुलकदुगकं सीपुठयेयग ॥ उति
भगतीकगम ॥ ॥ एवकुलमनुग ॥ परिपुल पानि वि-
कपु भुलभुद सुखसां कमु हमिभुपयिग ॥ वमपुदुलि
॥ कमु भुपयिग उतिमनुमनुवम ॥ भवः सुखसां
मिपकमुविठिः ॥ उतिमनुमनुवम ॥ ॥ विपदकयवमः
विमकय ॥ विपदय ॥ विमकय ॥ विपदय ॥ विमकय ॥

३५

ॐ

धनः वज्रपाशकैः न वा ठैरवकल्लगिः धानुगवृभल्लेन॥
 मं गं न वज्राय॥ यं गुरुनधव॥ रमेयव॥ वं वमनेव व॥ लं
 महेस्त्वव॥ वा॥ विप॥ त्रिक॥ पूतिभूक॥ विहृक॥ सवृक॥
 सवृगीक॥ ति विप॥ त्रिकल्लगिपत्रये दूद्वल्ल वमः॥ पूतिभू
 कल्लगिपत्रये विहृवे॥ ति विहृकल्लगिपत्रये नद्वय॥ ति
 सवृकल्लगिपत्रये गं न गय॥ ति सवृगीकल्लगिपत्रये
 मल्लमिवयनमः॥ उ॥ त्रिपाशुगवृधरु विपिः॥ उ॥ य॥ उ॥
 ति॥ त्रि॥ मं॥ सवृकल्लगिपत्रये मं॥ य॥ मं॥ य॥ मं॥ य॥ मं॥ य॥
 धनुकाम॥ य॥ ग॥ य॥ क॥ य॥ मं॥ य॥ ति॥ मं॥ य॥ विहृय॥ मं॥ य॥ मं॥ य॥
 ति॥ मं॥ य॥ मं॥ य॥ मं॥ य॥ ति॥ मं॥ य॥ मं॥ य॥ ति॥ मं॥ य॥
 ति॥ मं॥ य॥ मं॥ य॥ मं॥ य॥ ति॥ मं॥ य॥ मं॥ य॥ ति॥ मं॥ य॥
 वज्रनिजनुवि॥ ति॥ मं॥ य॥ मं॥ य॥ मं॥ य॥ ति॥ मं॥ य॥ मं॥ य॥
 वल्लः ५॥

三

97

[illegible]

मङ्गल्ये १

[illegible]

91

[illegible]

समुकलमं नमिन् श्रीने ॥ नेदी कलमं वामकृते ॥ कैरवकलमं मिगिमिथिपुता ॥

भवकुतमनै ॥ भवेन्नैवमः ॥ ति वटलाहृष्टमणं ॥ उगुर
कायगप्यर उ सुवठयकम् ० गगन रगग पयनल सुमसुः दध
नममसुं ॥ ति वटलाहृष्टमणं ॥ भवेन्नैवमः ॥ सुव मिगमि ॥
सुमीलिउविधय ॥ ति वटकुपैरवय विधय भुगवमः ॥ ०० ॥
०३ सुमः ॥ ति ह्रीं मय नैव विधय भुगवमः ॥ ह्रीं ह्रीं ॥ ह्रीं मिग ॥ ह्रीं
मिग ॥ ह्रीं कय ॥ ह्रीं वेर ॥ ह्रीं सुमः ॥ ति वमः मिगय ॥ ०३ ॥
ति ह्रीं ॥ वमिग ॥ मः मिगय ॥ मिगव ॥ व नेर ॥ य सुमः ॥ व गंमन
भवे ॥ मः उगुरवयय ॥ मि सुमो ह्रीं यय ॥ व वममेव उगुरय ॥
य भेहृरुगुगुये ॥ ननुववययः ॥ ~~मः सुमो ह्रीं यय ॥ व वममेव उगुरय ॥~~
३ मः ॥ वव ॥ मि रमि व ॥ व उगुरय ॥ य भेहृरुगुव ॥ भुगवमः ॥
सुमीलिउविधय ॥ ति ह्रीं सुमो ह्रीं वये ह्रीं यये गुरे ह्रीं
भवगुवममेव नमसु मरुपै ह्रीं वमः ॥ नं भेहृरुगुवययमः
नेमः ॥ यवकलं यवमजिं सुहृगुगुं य वगुमंमेव व उगुमंमेव
भुगुः

[illegible]

ਭਾਖਾਨਾਗੀਤ: ਭਾਖਾਨੀਤ:

永

30

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

३३

[illegible]

ॐ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
 सुखाद्विषये विलसति शीतलं निषेत् ॥ धर्मयोगिनि कं लेपयेत् ॥
 उक्तं च धर्मकृत्यं यथाधर्मेन धर्मदायास्तु तथैव ॥ उक्ते प्रपन्नीया
 मृता ॥ हिंसा परद्रोहे साक्षुर्विष्टे योगयोगिनि सुखं सुखं सुखं
 धर्मार्थं ननु सत् ननु सत्यं मे धर्मं ननु उक्तं ॥ अस्माभिरेव
 कुलकाश्रितम् ॥ ॐ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ लोकोत्तमं धर्मं नमो विष्णवे ॥
 उक्तं धर्मं मनुजानि लिपेत् ॥ यथा ॥ उक्तं विपरीतं गद्यं लिपेत् ॥
 मेढं ज्ञेयः ॥ हिंसाः सिद्धाया ॥ ॐ धर्मं सर्वं भगवत्पादौ विषये ॥
 नीतिविषये ॥ सुप्रसन्नं च सुखं विष्णुं समं सुखं सुखं सुखं
 सुखं सुखं नवरात्रं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मित्रं नमो भगवते
 विष्णुकं वा ॥ सुखं मयिकं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ उक्तं सुखं
 उपरं सुखं ॥ हिंसां पुनश्च कर्मणि ॥ उक्तिः पूजा ॥
 उक्तं पाद्भ्यां नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मयिकं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यथा ॥

[illegible]

३५

विंमसुसकय रंहरयवेधन॥ विभुरय भनमिययवेधन॥
उतः मेरुसहयंराने॥ इयः कुले॥ धरुगि मयु सिधु॥ उतः पमिधुन
उतः येवः धरुगु कनमरानेन रानायेनने ग कविनतु
उतः धरुगु उतः॥ मयुग मयुपम धरुगु सिधुगं रीसिधु -
रलीसिधुगं मलीसिधुगं वेव सिधुग॥ धरुगु मेरुगं धरुगु वरयेग॥
विंमसुसकय मयुगि उतः मयुगु धरुगु पिनि॥ उतः वेव॥ उतः
ममसुसकय विनतुनि॥ उतः मयुगु वरानेन सिधुगं॥ उतः मयुगु॥
वरुगु धरुगु॥ मयुगु मयुगु॥ उतः विनतुगु॥ उतः लरानेन
सिधुगं धरुगुः सिधुगं॥ उतः धरुगु मयुगु वरयेग॥ उतः मयुगु
वरयेग॥ उतः मयुगु मयुगु मयुगु मयुगु मयुगु॥ मयुगु मयुगु
धरुगु धरुगु॥ मयुगु मयुगु धरुगु मयुगु मयुगु मयुगु सिधुगं
मयुगु मयुगु॥ धरुगु॥ मयुगु धरुगु मयुगु मयुगु मयुगु मयुगु
सिधुगं धरुगु मयुगु मयुगु मयुगु मयुगु॥ उतः मयुगु मयुगु

[illegible]

六

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卅

[illegible]

和

कटुवाक्यक॥ त्रैलोक्यक॥ सत्त्वमाक॥ भूमाक॥ धनुगुणक॥
 त्रैलोक्यक॥ कल्लयैवमः॥ सुषोमकलः॥ प्रधाकल्लयैवमः॥
 यमाक॥ भूमनमाक॥ धीतिक॥ धीतिकरीक॥ धातिक॥ धातिकरीक॥
 भामाक॥ भगीमिक॥ सुनुभानिनीक॥ सामिनीक॥ हनुगुणक॥
 लक्ष्मीक॥ कायाक॥ संप्रलमल्लक॥ सुमगुणकल्लयैवमः॥
 सुषयधिकलः॥ प्रधाकल्लयैवमः॥ नीलरक्तक॥ कपिलाक॥ ॥
 विमलिनिनीक॥ हल्लक॥ त्रैलोक्यक॥ कटुवादिनीक॥
 कटुवादिनीक॥ गौरीक॥ सदाविनीक॥ रुचिः संप्रधा॥
 सुषयमात्रं भुक्तल्लयैवमः॥ धानुपत्रासु मेषगानु सिसनानु
 सवुभुभुत्रासु रायेग॥ भनुः प्रकाष्टुत्रे॥ त्रिंश्री भुक्तुं कटु॥
 त्रिंश्री॥ श्रिं शिर॥ धमिमा॥ सुकव॥ कुं नेत्र॥ कटुमुयकल॥
 उरिधनुपत्रासु भनुः॥ सुषयमात्रं॥ त्रिंश्री कुं कुं ५६७९
 ५७९ ५७९ ५७९ ५७९ ५७९ ५७९ ५७९ ५७९ ५७९ ५७९

मयेगीसंगी निष्कलं समुत्तरमभुगीसंगीस प्रत्ययेत् । सुप्रभु
 वैष्णवकलम प्रत्ययेत् ॥ तिं गं गलपुत्रयेवमः ॥ गं ह्रस्वः ॥ नी मिरः ॥
 तु मिरः ॥ गै कवः ॥ गै वेः ॥ गः सुः ॥ तिं गी मः ॥ गलपुत्रिव
 ल्लठयैवमः ॥ गं ह्रस्वः ॥ नी मिरः ॥ तु मिरः ॥ गै कवः ॥ गै वेः ॥ गः सुः ॥
 सुप्रभु ॥ तिं दीं दीं लीं गीं गं गलपुत्रये वरवरम अवलानं मे वम
 भानयमुद्रा ॥ ति ह्रस्वः ॥ मी गलपुत्रये मिरः ॥ दीं वरवरम मिरः ॥
 लीं भवलानं मे कवः ॥ गीं वमभानय वेः ॥ गं मुद्रा सुमुद्रा ॥
 तिं दीं दीं लीं गीं गी गलपुत्रिवल्लठयै भवलानमुद्रयं भम ॥
 वृषमं जुन १ मुद्रा ॥ ति ह्रस्वः ॥ मी गलपुत्रिवल्लठयै मिरः ॥ दीं भवमुद्रा वरवरम
 लानमुद्रा मिरः ॥ लीं ह्रस्वः कवः ॥ गीं भमवृषमं वेः ॥ गीं जुन १ मुद्रा
 सुः ॥ तिं लीं लीं कं जुमगयवमः ॥ कं ह्रस्वः ॥ कं मिरः ॥ तु मिरः ॥
 कै कवः ॥ कै वेः ॥ कः सुः ॥ तिं ह्रस्वः मी भवयवमः ॥ सुह्रस्वः ॥

वरवरम
 +

७॥

८ छिद्रमः चं स्त्री गुहकालिके स्त्रीसुख ॥ छिद्र॥ कुं मिर॥ भः मिया॥ चं कव॥ स्त्री नर॥
गुहकालिके स्त्रीसुख ॥ मरु॥ ८

[illegible]

३३

[illegible]

५५

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

三

ॐ ह्रीं ह्रीं लक्ष्मी भद्र लक्ष्मी ह्रस्वः ॥ ॐ भव कर्म ह्रस्व भव मे ठा गुरु यि वि
मिग ॥ ॐ सु ठि मं ॐ ध्य कृ मिपः ॥ ॐ भव भव गुरु कुपे कयः ॥ ॐ
भवतुः य वि मे मि वि नेरुः ॥ ॐ ह्रीं मः शुभ सु सुयः ॥ ह्रीं ह्रीं लक्ष्मी
ते मेः ॐ ह्रीं ह्रीं काण ग ल ह्रीं नम क न ल ह्रीं भ क ल ह्रीं
मेः ॐ लक्ष्मी ह्रीं ह्रीं ॥ ६ ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं लक्ष्मी ते मेः ह्रस्व य नमः ॥
ह्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं ह्रीं मिग भुग ॥ ह्रीं ह्रीं काण ग ल ह्रीं मिप यै व ध ॥
ह्रीं ह्रीं नम क न ल ह्रीं कय माय ह्रीं ॥ ह्रीं ह्रीं भ क ल ह्रीं नेरु ह्रीं व ध ॥
ह्रीं ह्रीं मेः ॐ लक्ष्मी ह्रीं ह्रीं सु सुय रु ॥ ६ ॥ ॐ ॐ लक्ष्मी मेः व ल
य नमः ॥ ॐ ह्रस्वः ॥ लक्ष्मी मिगः ॥ मेः मिपः ॥ ॐ कयः ॥ लक्ष्मी नेरु ह्रीं ॥
मेः सु सुयः ॥ ६ ॥ ॐ लक्ष्मी मेः ॐ ह्रीं ह्रीं नम ग ल न ल व य ॐ
भ क ल न ल व य ॐ य ग ल व न न य ॐ ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ मेः लक्ष्मी ॐ
कर्म सु गै र य य नमः ॥ ॐ ह्रस्वः ॥ लक्ष्मी मिगः ॥ मेः मिपः ॥ ॐ कयः ॥
लक्ष्मी नेरु ह्रीं ॥ मेः सु सुयः ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं क्लीं नमः भद्रा विप्रुगैरवी कुलपद्मि सुदुष्पद्मवमः॥
 ॐ ह्रमः॥ क्लीं मिगः॥ मिः मिपः॥ भद्रा विप्रुगैरवी कवः॥ कुल
 पद्मि सुदुष्पद्मवमः सुदुः॥ १॥ ॐ ह्रीं वं नमः॥
 ॐ ह्रमः॥ ह्रीं मिगः॥ हूं मिपः॥ हूः कवः॥ गा वेतुः॥ यै सुदुः॥ १॥ ॐ उ
 त्रिपुत्रपथ किं सुपिपि यन्मठयमभुतिं यन्मिस्त्रममहं वा उन्म
 ठगवति समय ०:०: शुद्धा॥ ॐ उत्रिपुत्रपथ ह्रमः॥ किं सुपिपि
 मिगः॥ यन्मठयमभुतिं मिपः॥ यन्मिस्त्रममहं वा कवः॥ यदुं॥
 उन्मठगवति वेतुः॥ समय ०:०: शुद्धा सुदुः॥ १॥ ॐ ह्रीं नमः भद्रा
 गैरिमदुस्यितु शुद्धा॥ हूं ह्रमः॥ ह्रीं मिगः॥ हूं मिपः॥ हूं कवः॥
 हूं वेतुः॥ हूः सुदुः॥ १॥ ॐ वमः भद्रमिदुं यैगिनीष्टि वमः
 भद्रमिदुं मभुतिं वमैविष्टि मिगवन्मवमिष्टि यै भद्रमकुलकुलम
 कुवयिकयै ठगवतै सभुं कपयलिष्टि उन्मठ ॐ ह्रीं हूं हूं
 हूं क्लीं क्लीं वमः॥

परमहंसि विवि भाने विधे भूय भूममवि भकलनुरि
 उगिधुल्लैममलवि भवपसेठि उगिगि भकलमभूमवि वि
 रवि सुगमु ९ दम ९ वल्ल ९ नगरिगवमभुठमिगि भमभूम
 भूम ९ पदि ९ रिभुल्लैवठिठि ९ किमि ९ पद्वेन उगय ९ केस्य ९
 उगवद्वयभूम भकलमवेगवभूमय ९ परमकभूमि केठगयति ३
 भकलैरवभुपपरिगि रिभसवरवमिभु भकलमभुभुः भूम
 उगववभुल्लै रविमकाकगलि कालवमिनि कुं कुं भूमि
 भमनभुगं कुं ९ भगवभुगकुं किं किं कुं कुं कुं कुं
 भुका ॥ व. ९७ ॥ परमहंसि विवि दम ॥ विवि भाने निगम ॥
 विधे भूय भूममवि मायः ॥ भकलनुरि उगिधुल्लैममलवि कवः ॥
 भवपसेठि उगिगि वेः ॥ भकलमभूमवि वि सुभुयदल ॥ १॥
 किं किं कुं कुं सुं सुं मगिकायेवमः ॥ कुं कुं दम ॥ किं किं निगः ॥
 कुं कुं मायः ॥ कुं कुं कवः ॥ कुं कुं वेः ॥ दः दः सुभुयदल ॥ १॥

१. ॐ पंचवै ॥

तिङ्गीदी संसृमयै नमः ॥ ॐ कं कम्मयै ॥ ॐ सं सवत्तु ॥ ॐ पं पक्क
 रिट्टै ॥ ॐ उं उगयै ॥ ॐ यं यमिट्टै ॥ ॐ सं सगिकयै ॥ ॥ तिङ्गीं
 यमसियाय नमः ॥ ॐ हं ह्र ॥ ॐ मी ॥ ॐ मिय ॥ ॐ कव ॥ ॐ वे ॥
 हः ससुः ॥ ॥ तिङ्गीं लीमः नमो ठगवै ॥ ॐ सगसयै ॐ मी ॥
 तिङ्गी ह्र ॥ ॐ मी ॥ मः मिय ॥ नमो ठगवै कव ॥ सगसयै वे ॥
 ॐ मी ॥ ससुः ॥ ॥ तिङ्गीं लीमः दसवसवगुमिवि भगसुवै नमः ॥
 तिङ्गी ह्र ॥ ॐ मी ॥ मः मिय ॥ दसवस कव ॥ दसगुमिवि वे ॥
 भगसुवै नमः ससुः ॥ ॥ तिङ्गीं मीमः विरुसु ठगवै नमः ॥
 मं ह्र ॥ ॐ मी ॥ मं मिय ॥ मं कव ॥ मं वे ॥ मः ससुः ॥ तिङ्गी
 मं मीमः गसुयै नमः ॥ मं ह्र ॥ ॐ मी ॥ मं मिय ॥ मं कव ॥ मं वे ॥
 गः ससुः ॥ ॥ तिङ्गीं लीं लीं मीमः ठगवै ॥ ॐ मी ॥ तिङ्गी
 ॐ ह्र ॥ ॐ मी ॥ मं मिय ॥ ॐ कव ॥ मीमः ठगवै वे ॥ ॐ मी ॥
 मी ॥ ॥ तिङ्गीं कुं कुं उगयै नमः ॥ ॐ ह्र ॥ ॐ मी ॥ ॐ मिय ॥

है कव॥ है नर॥ हैः सधुः॥ २॥ ति ह्रीं ह्रीं न्नी नमो भगवति भ
 क्तुवि सव प्रल्ल भुक्त॥ है हन॥ है मिः॥ है मिः॥ है कव॥
 है नर॥ हैः सधुः॥ २॥ ति ह्रीं भवैषां ननु नमो भगवति भ
 विभुल्लभै भुक्त॥ है हन॥ है मिः॥ है मिः॥ है कव॥ है नर॥
 हैः सधुः॥ २॥ ति ह्रीं नमो भगवति भ
 मि भुक्त॥ है हन॥ है मिः॥ है मिः॥ है कव॥ है नर॥ हैः सधुः॥ २॥
 ति ह्रीं ह्रीं ह्रीं नमो भगवति भ
 ति ह्रीं ह्रीं ह्रीं एक नमो भगवति भ
 भुक्तै नमो भगवति भ
 ति ह्रीं ह्रीं ह्रीं नमो भगवति भ
 नमो भगवति भ
 ति ह्रीं ह्रीं ह्रीं नमो भगवति भ
 ति ह्रीं ह्रीं ह्रीं नमो भगवति भ

[illegible]

भुवनीं सिवमुकुपंष्टादा मयुषाऽल्लेन नल्लग्रे तिलकं
 लडा॥ धनुर्देवता प्रथमि गमिसहृता॥ सुप्रसिद्धमुदिधिः॥
 सुप्रसिद्धमा विष्टभूम कंगुलमहुस्तु वगुष्टा प्रसादु॥
 गङ्गादेयेन दत्तं दत्तेन केन मिता॥ गङ्गामितो यस्मै देवं भाङ्गमा
 भववन्ति उमा॥ उषास॥ यज्ञपात्रक मयुक्तः सियेन गण्डितः
 सियः पामर्यसकाः समी सिवदत्तः प्रकीर्तितः॥ गुरुवाद्य +
 भुक्तः॥ कुञ्जभागतु जगन्नगरि सन्नेन च उगार प्रियद्रुतिः
 गङ्गादेये विधि मेतमहुष्टः सकृद्भव विष्टवत्सलाता॥ तुङ्गीग
 वेसकं लडा॥ दत्तो देव प्रसादु॥ ति मेम भानुनाय वसः॥
 वासको॥ ति भुवम भुनाय वसः॥ सति ल करे॥ गङ्गादेये
 सुप्रसिद्धमिति कंगायिउ जग्नै रवानवे भाङ्गं मयुक्तं भुलं
 भवहा॥ भुवमभूतं वलीमभूतं धर्मिकगत्तं सकाशित
 विठेः जगता॥

उत्तुवा ॥ हस्त्यामपुत्रादि मिष्टमूपायामनुनीययन। ह्यमष्टुं
विष्णुं चैवयिवा भवगुक्ति विस्तरण प्रवृत्तं परमं तम ह्यमसात्रुमा
विष्टुं प्रवृत्तमसात्रुमावकट्ट ह्यमष्टुं मेल वामगामाप्रुमा
नेल कर्ममनुव/न ह्यल्लुक्तमगकगं ग/दीवा उवैवपष्ट
वामगामाप्रुमामेल ह्यमष्टुं प्रुपष्ट ह्यमष्टुमापि मुसिगुलैव
कगकुं ठिवा ह्यमसात्रुं प्रुपष्टेग ॥ ७३ ॥ उतिमनुमकुं ॥ प्रवृत्तम
त्रुह्यमष्टुं प्रुपष्ट ह्यमष्टुं मेल वामगामाप्रुमामेल वृत्तं
नडा कगकुमनुपष्ट विठेहसि प्रुविष्ट उमृकगकुं विठेहस
यल्लमेल ह्यमसात्रुं प्रुपष्ट ७७ ॥ प्रवृत्तं नडा मेल वामगामाप्रुमा
मुहस्त्ये प्रुविष्टे ॥ ७४ ॥ उतिनानीमकुं ॥ प्रवृत्तं मुहस्त्ये ह्यमसात्रुं
उमृकगकुं उमृकगकुं मवउमल्लमपवउमस्त्ये ह्यमसात्रुं निष्कल
ठल्लगकं सीपुं ठावयग ॥ ७५ ॥ उतिपगमीकगं ॥ ७६ ॥ ठल्लमनुग

कव. ११

५३

सक्रः

सपिबुते वि० ७॥ सकुट॥ मज्जिपुपुठैगवसु॥ सैवः॥
भयन्नेवीमदितुसु वरुपुपुठैगवसु॥ भदल्लसु मदितुसु
भदल्लगैगवसु॥ सान्गु मदितुसु ठीपल्लैगवसु॥ सिकु
मदितुसु कपल्लीमठैगवसु॥ दारुकीमदितुसु उमरुठैगवसु॥
वैपुवीमदितुसु जैपगल्लैगवसु॥ कौमारीमदितुसु मठ
ठैगवसु॥ भद्विगीमदितुसु नठैगवसु॥ बुद्धीमदितुसु गमिग
ठैगवसु॥ सुवैः॥ पितुः ठैगवेगुसु नठुसु॥ व॥ भतुः ठैग
गेव्या नठुल्लः॥ उरु॥ व॥ उरुसु॥ थग्लेक मिदधरवी
भपुपु भठ दगधरावमठंक विपु॥ ठिऊनव॥ सकुसु उर
भमववमः॥ ठैगवसु॥ सैवः॥ भयन्नेवीमदितुसु वरुपुपुठैगवसु॥
भदल्लसु मदितुसु भदल्लगै॥ सान्गु मदितुसु ठीपल्लैगवसु॥
सिकुमदितुसु कपल्लीमठै॥ दारुकीमदितुसु उमरुठैगवसु॥

सक्रः उरुभमववमः॥१॥

[illegible]

भजल्लक्ष्मी भक्ति मंदगठैगव ॥ सङ्गुक्ष्मी भक्ति वीधल्लैगव ॥
 विष्णु भक्ति कपल्लीमठैगव ॥ वरगदी भक्ति उच्चुठैगव ॥ वैष्णु
 वीमभक्ति ज्ञेयगठैगव ॥ कौमारी भक्ति सङ्गुठैगव ॥ भदे
 सुगी भक्ति ममठैगव ॥ ब्रह्मी भक्ति सुमिगठैगव ॥ तुमं वः
 सङ्गु वमः ॥ सङ्गुय ॥ सङ्गुय ॥ सङ्गुय ॥ सङ्गुय ॥ भया
 नवी भक्ति यरुगुपठैगव ॥ भजल्लक्ष्मी भक्ति मंद
 गठैगव ॥ सङ्गुक्ष्मी भक्ति वीधल्लैगव ॥ विष्णु
 भक्ति मंकेठैगव ॥ वरगदी भक्ति उच्चुठैगव ॥
 वैष्णु वी भक्ति ज्ञेयगठैगव ॥ कौमारी भक्ति स
 ङ्गुठैगव ॥ भदे सुगी भक्ति ममठैगव ॥ ब्रह्मी भक्ति
 सुमिगठैगव ॥ त्वमेव गङ्गा ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥
 भक्ति सङ्गु वमः ॥ सङ्गुय ॥ सङ्गुय ॥ सङ्गुय ॥

कपल्लीम

^

सं.

५५

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
शुद्धि ५०:

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सं०
५०

पञ्चा॥ सुननुयनमः॥ पञ्चा॥ सुननुय॥ वैराग्य॥ तिस्रदय॥
सुननु॥ कर्मरु॥ कलिकण्यै॥ उतेभ्युभरान्तपुत्रेदेवीधर॥
तिधर्मसुगुप्तं भूयस्तेवी नययेविनाभा सुभक्तुमानं धाम
सुमनसु भूमिसिनुयेत॥ पञ्चवक्तु कर्मदेभक्तु सगुमगसु
गमा भूमिंस भूमिंस सभक्तु भूमिकर्मिगमा॥ तिह्रीभयस्तेव
वैधल्यभूतनमः॥ ह्रीं ह्रीं॥ ह्रीं सिग॥ ह्रीं सिग॥ ह्रीं कव॥ ह्रीं
नेर॥ ह्रीं सभुः॥ तिह्रीं वक्तुपुत्रैगवयवैधल्यभूतनमः॥
ह्रीं ह्रीं॥ वक्तु सिग॥ पुप सिग॥ वैराग्य कव॥ वैधल्यनेर॥ भूतनमः
सभुः॥ उतेभ्युभरान्तपुत्रेदेवीधर॥ तिह्रीं सभुः॥ ह्रीं सभुः॥ ह्रीं सभुः॥
ह्रीं सभुः॥ सवभुः॥ नमः॥ सभुः॥ ह्रीं सभुः॥ ह्रीं सभुः॥
ह्रीं सभुः॥ यं उतेभ्युभरान्तपुत्रेदेवीधर॥ तिह्रीं सभुः॥ ह्रीं सभुः॥
वक्तुयभुः॥ नमः॥ ह्रीं सभुः॥ ह्रीं सभुः॥ ह्रीं सभुः॥

[illegible]

月。

4

पञ्च॥ सुननुयनमः॥ उग्रय॥ सुगय॥ वैगय॥ विवृय॥
सुलेह॥ केमवृह॥ कलिकयै॥ उग्रभृमरालपत्रे मेवीधुः॥
विपग्मसिगुनुं भयमेवी नवये विनाम॥ सुभं सुमार्गं धाम
सुमलनुं भमसिनुयेज॥ पद्मवत्सुकं देवं भक्तं भक्तमगम
गम॥ भुगिंस भुसक्तिं स भुभक्तं भुक्तिमिउम॥ विहं भयमेव
विषय भुगनमः॥ हं ह्र॥ ह्रीं सि॥ ह्रीं सि॥ ह्रीं कय॥ ह्रीं
ने॥ ह्रः सुभुः॥ वि॥ वक्रुप हैगय विषय भुगनमः॥
ह्र॥ वक्रु सि॥ सुप सि॥ हैगय कय॥ विषय ने॥ भुगनमः
सुभुः॥ **ग्रीं मीमिउ विषय॥** वि॥ सुभेगुं सुभेगुं यैरयैरु
हृद्वभवतः सवभवेहृ नमः॥ नमः सुभेगुं सुभेगुं नमः॥ सं गं सव
शयभु॥ यं उग्रधवशयभु॥ सं सुभेगुं ययभु॥ वं कभमेव
वशयभु॥ लं भक्तु उवशयभु॥ वि॥ सुभेगुं भवतु
ह्रययनमः॥

[illegible]

[illegible]

मीमिउविषये॥ सुपेगीसुगीमदिउनु॥ सुकुनैगवमु॥ सुममनं वमः॥
 सुनीमिउविषये॥ मयानेवीमदिउनु॥ सुकुनैगवमु॥ सुममनं वमः॥
 सुमरुकनु॥ ककुलनु॥ ठीमगवनु॥ सुकुनैगवमु॥ कगवीरनु॥ कग
 कुपुनु॥ कानलनु॥ जलेसुगनु॥ केनकनु॥ रिपगनुकनु॥ सुपि
 वेगनु॥ सुपि रिपुनु॥ जेयगनु॥ कानलनु॥ कगनिलनः॥ एकप
 ननु॥ ठीमकुपुनु॥ सुमगनु॥ कएकेसुगनु॥ सुममनं वमः॥ ॥

मीमिउविषये॥ सुपेगीसुगीमदिउनु॥ सुकुनैगवमु॥ सुनीमिउ
 विषये॥ मयानेवीमदिउनु॥ सुकुनैगवमु॥ सुमरुकनु॥ ककु
 लनु॥ ठीमगवनु॥ सुकुनैगवमु॥ कगवीरनु॥ कगकुपुनु॥ कानल
 ननु॥ जलेसुगनु॥ केनकनु॥ रिपगनुकनु॥ सुपि वेगनु॥ सुपि रिपुनु॥
 जेयगनु॥ कानलनु॥ कगनिलनः॥ एकपननु॥ ठीमकु
 पनु॥ सुमगनु॥ कएकेसुगनु॥ सुममनं वमः॥ सुपि सुगनु॥
 मीमिउविषये॥ सुपेगीसुगीमदिउनु॥ सुकुनैगवमु॥ सुनीमिउविषये॥

॥ ५ ॥
 सुममनं वमः॥

॥ ५ ॥
 सुममनं वमः॥

मन्त्रिगणविषयः॥

यवः मिह्रकु कश्चैवमिह्रकुः प्रकीर्तिताः ॥ ठगवितुमुम ॥ ७१ ॥
 नीलिगविधये ॥ स्वपेगीसुगीमदिग सुकु रैगव ॥ मय्येन्दीमदिग
 वज्जुपठैगव ॥ सुमरुका ॥ ककुल ॥ ठीमगव ॥ सुदुल्लम ॥ कग्दीग
 ककुलपु ॥ कालगुम ॥ जलेसुग ॥ देनक ॥ डिभगनुका ॥ सुविदेगल ॥
 सुप्रिदिग ॥ जेयग ॥ काल ॥ कगलिवा ॥ एकपान ॥ ठीमकुप ॥ व
 सुमग ॥ दणकेसुग ॥ उरंवः सुतुवमः ॥ नीलिगविधये ॥ स्वपेगी
 सुगीमदिगय सुकु रैगवय ॥ नीलिगविधये ॥ मय्येन्दी
 मदिगय वज्जुपठैगवय ॥ सुमरुकाय ॥ ककुल्लाय ॥ ठीमग
 वय ॥ सुदुल्लमाय ॥ कग्दीगय ॥ ककुलपुय ॥ कालगुमाय ॥
 जलेसुगय ॥ देनकाय ॥ डिभगनुकाय ॥ सुविदेगलाय ॥ सुप्रिदि
 काय ॥ जेयगय ॥ कालाय ॥ कगलिने ॥ एकपानाय ॥ ठीमकुप
 य ॥ सुमगय ॥ दणकेसुगय ॥ एवमेव गनुकु ५५ पुपरीधक
 म स्वपेमान नलि अतुंगवग ॥ उरे गनुसीप ५५ ॥ ६१ ॥

தமிழகம்

[illegible]

विमलमूर्ति भक्तमपि भवेत्पूजनामिति ॥ उक्तं तु पञ्च ठावम्
विदुर्निदुर्गुके सिद्धे कालेकलसु गदिते ठावाठायाम् भवेत्
सद्वृत्ते कलनातीति सात्त्वित्वे लये परं ॥ लये रय विनिर्मुक्ते निवृत्तपुमिगये
सात्त्वित्वे लये भक्तवत् ॥ सात्त्विकं पालिनीसुगी ॥ भक्तकान्
भक्तकान् परिप्रेक्ष्ये लयापरं ॥ कुरुविभवसदानं वृत्तक
वृत्तमंतिता ॥ वृत्तवृत्तं ॥ उक्तं भवेत् कुरुमं सगसगम् ॥ सदा
भक्तं नितातुय भक्तिगानं कुरुते ॥ पदसूयैगिनीनां तु परं
पदसु भवेत् ॥ विगुयैवमः ॥ कर्त्तव्यै ॥ सत्त्वै ॥ भवेत्कुरु
द्यै ॥ कर्त्तव्यै ॥ सत्त्वै ॥ ठीनवत्त्वै ॥ भक्तवत्त्वै ॥
सुधमवृत्तं ॥ यमभक्तव्यै ॥ ३ ॥ सद्वृत्तवत् ॥ पितुः कैवर्गवैरु
नद्वृत्तं ॥ द ॥ भक्तुः कैवर्गवैरुय नद्वृत्तः ॥ उक्तं ॥ द ॥ उक्तः
भक्तिके भक्तमपि कुरु ॥ भक्तवत्त्वै ॥ निवृत्तं ॥ सिद्धपदवी
भक्तवत् ॥ सिद्धवित्तै ॥ सत्त्वै ॥ भक्तवत्त्वै ॥ भक्तवत्त्वै ॥

मनीसिउदिमये॥ तिंहीदीभयानवीसीपंपरिकल्लयमिमुठव
 मः॥ तिंमः सुभकः॥ मयारुल्लवुगुतेरायत॥ मवुन॥
 उः॥ इहवुमिउ विनवुतुममपीपगह्वे॥ सुवगिकम॥
 उरुल्लवमवपमममुह॥ सुल्लमुहपउतुह॥ गः सुभ
 यकल॥ कः सु॥ रः सु॥ यै सु॥ यै सु॥ कुरुयकल॥
 तिंसीपसुतुकल॥ तिंरु॥ ल्लीमि॥ पमिपः॥ सुकव॥ कुं
 नेउ॥ कुरुय॥ उः॥ पडिमसुतुपयल्लनपाडिनेउपय
 मयममल्लकनं गवुनमः॥ सेउ नमः॥ पंच नमः॥ उनतु
 मंकरुतुह॥ तिंरुः कल॥ सुल्लनं केमि कल॥ दे सुवगुह॥
 कः कल॥ उल्लपनं केमि कल॥ एवं मवुहल्लक॥ पगमु
 वल्लकनं क॥ पगल्लक॥ ममीकरल्लक॥ मीसुनं क॥ उरुवक॥
 मल्लनं क॥ पनं क॥ मित्रिकपगल्लक॥ मिपल्ल केमि कल॥
 उरिउमं पूह॥

सं.
 ७०

[illegible]

शु. ७७

[illegible]

示

तिं वं सुगु विठ्ठल यये ठव नमः ॥ ॐ त्रिभुवनं लभ भुवनं
मगीरुमिष्ट ॥ तिं वं सुगु का गय नमः ॥ भभान् ठव गये ॥
सुगु ॥ ५५ ॥ तिं वं सुगुः प्रवव कल्प नं के गमि सुगु ॥ ३ ॥
एवं भभान् ठव ॥ तिं वं सुगुः प्रवव कल्प नं के गमि सुगु ॥ ३ ॥
एवं भभान् ठव ॥ तिं वं सुगुः भभि कल्प यमि सुगु ॥ ३ ॥ एवं
भभान् ठव ॥ तिं वं सुगुः भभि कल्प यमि सुगु ॥ ३ ॥ भभान् ठव ॥
तिं वं सुगुः सुं विठ्ठल कल्प यमि सुगु ॥ ३ ॥ एवं भभान्
ठव ॥ तिं वं सुगुः सुं विठ्ठल कल्प यमि सुगु ॥ ३ ॥
एवं भभान् ठव ॥ तिं वं सुगुः सुं विठ्ठल कल्प यमि सुगु ॥ ३ ॥ तिं वं सुगुः
सुं विठ्ठल कल्प यमि सुगु ॥ ३ ॥ तिं वं सुगुः सुं विठ्ठल कल्प यमि सुगु ॥ ३ ॥
कटि क ॥ ३ ॥ भभान् क ॥ ३ ॥ नभि क ॥ ३ ॥ उभान् क ॥ ३ ॥ कल्प क ॥ ३ ॥
कल्प क ॥ ३ ॥ रात्र क ॥ ३ ॥ भभान् क ॥ ३ ॥ सुगु क ॥ ३ ॥ सुगु क ॥ ३ ॥
तिं वं सुगुः सुगु सुगु भभान् क गमि सुगु ॥ ३ ॥ एवं भभान् ठव ॥

१५

[illegible]

永

[illegible]

[illegible]

三

٧٢

五

[illegible]

५

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ भुले ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ भुले ॥ भः सिवगुणाय नमः ॥ सिवगुणि ॥

सर्वेष्टाग्रभक्षः ॥ धनः उपनं क ॥ ह्रमलं क ॥ पूजलं क ॥ १
भवेन भवभक्षः ॥ धनः उपनं क ॥ ह्रमलं क ॥ पूजलं क ॥
भुलेन भुलभक्षः ॥ उते न्नवयिने पदं ते भूमि संभुष्ट ॥ सिव
सक्तिपुत्रप्रदायि ॥ सिवसक्तुं नमः ॥ भमालनं गनुनमः
सुयनमः ५ धनमः ॥ उव्वभूमि दत्ता ॥ सिवयनमः ॥ सक्तुयनमः
गद्वरु ५ धनमः ॥ उति भूमि व संभुष्टः ॥ सक्तुयनमः ॥
ह्रमलं संभुष्टगनं ॥ सुदुष्ट भूमि सुयनं ॥ पूजलं संभुष्ट
उपनं भुलभक्षः ॥ उति न्नवयिने पदं ते भूमि संभुष्ट ॥ सिव
यमि न्नमः ॥ उव्वभूमि दत्ता ॥ सिवयनमः ॥ सक्तुयनमः ॥
सिवकल ॥ उव्वभूमि दत्ता ॥ सिवयनमः ॥ सक्तुयनमः ॥
कर्मि कल ॥ उति न्नवयिने पदं ते भूमि संभुष्ट ॥ सिव

सं.
७

सुमेधेसिद्धपरि ॥ १ ॥ सीधु सुगिरुगुं ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥
तिष्ठेत् ॥ १ ॥ सुमेधेसिद्धपरि ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥
वमः ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥
वमः ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥
संज्ञवन् भगवन् ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥
तिष्ठेत् ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥
कैमिदपि ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥
भुवनं ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥
उत्तमं ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥
सुधु परिः ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥ सुधु परिः ॥ १ ॥

[illegible]

永

[illegible]

[illegible]

ਠੈਰਧਾਗੁਏ ਭੰਨਮਾਣ੍ਹਮ ਰੂਪਮਿਵਸ : ॥ ੩੩ : ਪੁਨਾਮ ਤੁਲੋਮਿ ॥
 ਚਿਤ੍ਰੇਸਾ ਵਰਗੁਗਾ ਫੁਲਧੀਯੋ ਵਾਸੁਜਾਲ ਸੋਮਨ : ਸਕੁਣ
 ਗੁਰਬ : ਮਮੀਰਨਸੁਕੇਂ ਕੁਠਾਰ ਸਕੁਣਕਮ ॥ ਨਿਦ੍ਰਿਵੇਖਿ
 ਮਜ਼ਸਤ੍ਰਿਮਾਨਿਤ : ਖਡ੍ਗੁਟਾ ਅਨੁਵਲਿ : ਲੋਕਸਾ : ਕਾਉਨਿ
 ਧਰੁਮਾਨਿਮਾਤ੍ਰਿਵੇਤ੍ਰ ਤੁਧਾਥੰਮੁਸ : ॥ ਚਿਨ੍ਤਾਮ : ਠੈਰਧਾਗੁ :
 ਗੁਣਨਾਨਾਨਿ ਠੈਰਧਾਗੁ ਗਿਰਿਨਾਮਕਾਉਨੁ : ਮਚੇਮੰਝਾਗ :
 ਮੰਪੁਨਾ : ਮਨੁਦੋਖਣ ॥ ੩੪ : ਬਿਭੀਧਾ ॥ ਚਿਨ੍ਦੇਵੰਦੁਰਾਕਲਸ
 ਮੇਮਕਾਂਤ੍ਰਿਵੇਤ੍ਰ ਪਦਮਾਨੇਸ ਵਰਨਾਠਧਨੰ ਮੁਸੁਕੁਮਾ ਸੁਖ
 ਠਧਾਨੁਦਰਗੁਧਿਤ੍ਰਧਾਨ ਸੇਵਾ ਵਸੇਕ੍ਰਿਤ ਸਮਨਠਨੁਕਰ
 ਵਸਮਾਨਿ ॥ ਚਿਨ੍ਤਾਮ : ਠੈਰਧਾਗੁ : ਪ੍ਰਸਵਾਨੁ ਵਾਲਾਤ੍ਰਾਤ੍ਰਾ
 ਰੂਪਨਾਗਿਰੁਤ੍ਰਾਤ੍ਰਾ ਮਚੇਮੰਝਾਗ : ਮੰਪੁਨਾ : ਮਨੁਦੋਖਣ ॥

उतिप्रलङ्गयमः॥ उतः कुम्भमृद्विवसिद्धः प्रसदितः॥ ति
 गृह्यकुयैवमः॥ प्रवे॥ सादस्यनवैवमः॥ सु॥ ति मृद्वि
 म॥ तिमृद्विगृह्यै॥ वै॥ तिमृद्विगृह्यै॥ ५॥ ति उमृद्विगृह्यै॥ वः॥
 तिमृद्विगृह्यै॥ ३॥ तिमृद्विगृह्यै॥ ३॥ ति मृद्विगृह्यै॥ मः॥
 उतिमृद्विगृह्यै॥ वद्विगृह्यै॥ मृद्विगृह्यै॥ मृद्विगृह्यै॥
 यद्विगृह्यै॥ ति गृह्यकुयैवमः॥ सादस्यनवैवमः॥ ति मृद्वि
 तिमृद्विगृह्यै॥ ति मृद्विगृह्यै॥ ति उमृद्विगृह्यै॥ ति मृद्वि
 ति मृद्विगृह्यै॥ ति मृद्विगृह्यै॥ ति मृद्विगृह्यै॥ उतः प्रलङ्ग
 यमृद्विगृह्यै॥ ति मृद्विगृह्यै॥ ति मृद्विगृह्यै॥ ति मृद्विगृह्यै॥
 वेवमः॥ उतिमृद्विगृह्यै॥ ति मृद्विगृह्यै॥ ति मृद्विगृह्यै॥
 मृद्विगृह्यै॥ उतिमृद्विगृह्यै॥ उतः कलप्रसदितः॥

सं.
 ७

ॐ ह्रीं निरुण वल्लयै नमः ॥ ह्रीं ह्रीं गङ्गायै ॥ लीं कवकायै ॥
लीं गङ्गायै ॥ ह्रीं मङ्गायै ॥ ह्रीं गङ्गायै ॥ ह्रीं वङ्गायै ॥ श्री
श्री ॥ मुनिविष्णुलै ॥ लीं मुहुराय ॥ कं तिलहै ॥ मंत्रु
नै ह्वनमः ॥ एवं भुजगुनै मये ह्व ॥ ॐ ह्रीं निरुण वल्लयै
भुज ॥ उहुरि ॥ मङ्गायै नमः ॥ उहुरि ह्वनयनामीनि ॥
ॐ ह्वनमङ्गायै भुज ॥ ॐ ह्वनय ॥ ॐ ह्वनय ॥
ॐ ह्वनय ॥ ॐ ह्वनय ॥ ॐ ह्वनय ॥ ॐ ह्वनय ॥
ॐ ह्वनय ॥ ॐ ह्वनय ॥ ॐ ह्वनय ॥ ॐ ह्वनय ॥
ॐ ह्वनय ॥ ॐ ह्वनय ॥ ॐ ह्वनय ॥ ॐ ह्वनय ॥
ॐ ह्वनय ॥ ॐ ह्वनय ॥ ॐ ह्वनय ॥ ॐ ह्वनय ॥
ॐ ह्वनय ॥ ॐ ह्वनय ॥ ॐ ह्वनय ॥ ॐ ह्वनय ॥

[illegible]

ॐ विष्णुमि ॥ कमुपमयगले मनुज भुवि सुते वामेभिरक
 धल्लपुपगमु नगोपवीतीमुक। श्रीमगंजं कयुगामनः
 मूर्तिपुगे मङ्गे वज्रमे लिम। विष्णुसीमुर पुरा पठगदा
 ल्लुमिरः मदनः॥ ॐ गुंगं गल पुरेयुदा ॥ ॐ वल्लठ ॥
 ॐ गीमः गल पुरे वल्लठयै भुजा ॥ ००३॥ गं हन॥ गीमिर॥
 गुं माप॥ गै कव॥ गे नै॥ गः मयु॥ धल्ल॥ विष्णु
 कभितुननपुस भगिरकुभुर ठरिणी सिवाम। मग्रीम
 ठयं वगं हमि धुठरं गल वाव वल्लठाम॥ ॐ गीमः गल
 पुरे वल्लठयै भुजा ॥ वरगल मः॥ ॐ श्री ह्रीं लीं गीं गं
 गल पुरे वरवगन भवराजं मे वसमानय भुजा ॥ ००३॥
 ॐ हन॥ श्री गल पुरे मिर॥ ह्रीं वरवगन माप॥ लीं भवराजं मे
 कवस॥

ॐ वसमानय ने० ॥ गंभूतः सुभूः ॥ पुनः ॥ दन्तीकानवमि
 न वतुभन कृतं विवेकं गमनं निधुं सिधया मपदी कयया
 मकृत्तया मरुतम वीरः प्रगमः पतु निमिपयुक्तः
 रूपासैवुल वीहृत्तः विधालः गुरु कलसः गुरु वदतु ठरः ॥
 पुनः ॥ वगवः वल्लठ ॥ विंहीहीलीली गीगील पतिवः
 ठयै मवः वल्लठ कृतं ममः वसः कृतं १०३ ॥
 विहृत्तः ॥ श्रीगल पतिवः वल्लठयै मिरः ॥ ही मवः वल्लठयै मिरः ॥
 लीहृत्तयै कवः ॥ गी ममः वसः ने० ॥ गी कृतं १०३ ॥ वगवः ॥
 सुभूः ॥ पुनः ॥ वः ॥ विहृत्तः प्रववः मिहृत्तः ॥ विहृत्तः ॥
 विहृत्तः कं कृतं ममः वल्लठयै ॥ ०३ ॥ कं हृत्तः ॥ की मिरः ॥ कुं
 मिरः ॥ कं कवः ॥ की ने० ॥ कः सुभूः ॥ पुनः ॥ वः मवः

५८
 वगवः +

सं.
 १०

गसिउं नसिउं पउकां सतिं सणवमपि सान सिपणि गराः
कुयगुणु वरने ठवउं विहुतै वरुतिउि वयमि वानवयः कु
भगः॥ भुलं॥ विहं हूमिः भुययसुयः॥ ००३॥ संकुरः॥
सकुरय सि०॥ विहुकुवः भुः कुरानिहै सिपः॥ हं कवः॥
ठा नै०॥ हं वः सभु०॥ भुलं॥ ह्रानं॥ ठवलने ननकुसं
नविमी कुभुम भुलं॥ भुगुतु भनरुने वउमभुन
भनिगुम॥ सुभमभुभुट॥ सुभ भगानासु कगुयम
एकसु सिनुयेहं उं वि० कुरं गुरयमभम॥ वरुधनमने
नवः भुमवरा नववुलः भपुसुः भपुगुसु नै विहुयः
धनुने गविः॥ भुलं॥ हं॥ विहं विमुगयै सुयः॥ ००३॥ वि
हं ह्रः॥ गीसि०॥ कुं सिपः॥ वै कवः॥ वि० नै०॥ वः सभुयः॥

५ तिस्रसुता वमिर्तुव मंघुतः सतिमः सवमाणा मृष्टे वरुतुपे नवावुन॥

अन्ता॥ घृणं॥ विवेतं विवुसं नदी वारुयकगमुसुमा अन्ता
मनं नमहृतां मुदके विमुगं ठरु॥ अन्ता॥ १॥ तिस्रसुताम-
नपयतु वरुतु पठेवदयु वैधला मुद॥ ००३॥ तिस्रं ह्रु॥
वरुमि॥ त्रुप मिपः॥ ठेवदय कवे॥ वैधला वेरे॥ अन्ता मुप
समुः॥ अन्ता॥ घृणं॥ मिर्तुसं पानुवतु नमदातु ममति
कमा सुलासा मुत्रे पपिनु वरुतु कवेव तमा मत्तुलन
उवसु मत्तुलन लवामकैः यतु नवावुन अन्ता मयानेवा
मुपवुकमा॥ अन्ता॥ १॥ तिस्रं मयानेवै वैधला मुपमुद ००३॥
इ ह्रु॥ इमि॥ इमि॥ इमि॥ इमि॥ इमि॥ इमि॥ इमि॥ इमि॥ इमि॥ इमि॥
परमवैगु नमु मयानेवै नवयववमा अन्ता मुद
पामा मुदमु मयानिमुयेत॥ अन्ता॥ १॥ मुदयेतः॥

सं.
११

[illegible]

[illegible]

并

73

त्रिंशत्सः त्रिंशत्सः गुरुकालिके द्वीमुखा ॥०३॥ त्रिंशत्सः ॥ मः मिः ॥ मः मिः ॥ त्रिंशत्सः ॥
 त्रिंशत्सः ॥ गुरुकालिके द्वीमुखा ॥०३॥ त्रिंशत्सः ॥ मः मिः ॥ मः मिः ॥ त्रिंशत्सः ॥
 त्रिंशत्सः ॥ गुरुकालिके द्वीमुखा ॥०३॥ त्रिंशत्सः ॥ मः मिः ॥ मः मिः ॥ त्रिंशत्सः ॥

दैः शुभं कथं ॥ दैः सुविशुद्धमग्निं नेत्रे ॥ ५ः सुवसुमन्त्र
शुभं ॥ विष्णुः मः दंमः भाषा नय नय मं दंमः शुभं ॥ ०३ ॥
विष्णुः ॥ शुभं मित्रं ॥ मः मित्रः ॥ विष्णुः ॥ शुभं नेत्रं ॥ मः सुवसुः ॥

पुनः॥ पुनः॥ ति॥ धीयुधनु ति॥ निः॥ कः॥ पुनः॥ धीयु

मन्त्रं यन्मन्त्रं श्रीयुक्तायै मन्त्रायै श्रीयुक्तायै

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

[illegible][illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

भारतं समिकतालक्ष्मणम् सुखं लालम्

[illegible]

三
七

ति ठवाय मेवाय मित्रि भुत्रेयुः ॥ ति सवाय मेवाय रान
 भुत्रेयुः ॥ ति मवाय मेवाय मित्रि भुत्रेयुः ॥ ति धनुपत्रेय मेवाय दाय
 भुत्रेयुः ॥ ति उवाय मेवाय सुकास भुत्रेयुः ॥ ति भनमेवाय भु
 भुत्रेयुः ॥ ति ठीमेवाय मेवाय मीम भुत्रेयुः ॥ ति वंसवाय मेवाय
 यराभन भुत्रेयुः ॥ ति ह्रीं ह्रीं भुं भकलठयदं गी रुग ह्ययिनरु
 भुत्रेयुः ॥ ह्रीं ह्रीं ॥ ह्रीं मिग ॥ ह्रीं मिग ॥ ह्रीं कय ॥ ह्रीं वीर ॥ ह्रीं ॥ ह्रीं ॥
 ति विव्रिकलगापि पत्रेयुः भुत्रेयुः ॥ ति ह्रीं भुत्रि भुत्रेयुः
 ति पत्रेयुः विप्लवे ॥ ति ह्रीं विप्लवकलगापि पत्रेयुः मवाय ॥ ति ह्रीं
 मवाय कलगापि पत्रेयुः गंवाय ॥ ति मवाय गीग कलगापि पत्रेयुः
 भनमिवाय ॥ ति भनमिवाय भुत्रेयुः ॥ ति धनमिवाय ॥ ति धनमिवाय
 धनमिवाय ॥ ति धनमिवाय ॥ ति धनमिवाय ॥ ति कलगापि पत्रेयुः

ॐ

ॐ

94

ਚਿੰਤੀ ਸਿਧਿ ਮਿਥੈ ॥ ਚਿੰਤੀ ਗੰਗੀ ਤੂੰ ਬਹਿਨੇ ਸੁਖ ॥ ਚਿੰਤੀ ਮੰਤ੍ਰੀ ਮੁੰਦਰੀ ਮੰਤ੍ਰ
 ਕਾਲਾਧ ॥ ਚਿੰਤੀ ਹੁੰਦੀ ਸੁਖ ॥ ਚਿੰਤੀ ਗੰਗਾ ਪਤ੍ਰ ॥ ਚਿੰਤੀ
 ਧੁੰਦਲਾਧ ॥ ਚਿੰਤੀ ਤੂੰ ਤੁਮਾਰਾਧ ॥ ਚਿੰਤੀ ਮੰਤ੍ਰੀ ਸੁਖਿ ਕਾਧੈ ॥
 ਚਿੰਤੀ ਸੁਖ ਸੁਖਿ ਕਾਧੈ ॥ ਚਿੰਤੀ ਤੂੰ ਤੁਮਾਰਾਧ ॥ ਚਿੰਤੀ ਸੁਖ ਸੁਖਿ ਕਾਧੈ ॥
 ਚਿੰਤੀ ਸੁਖ ਸੁਖਿ ਕਾਧੈ ॥ ਚਿੰਤੀ ਸੁਖ ਸੁਖਿ ਕਾਧੈ ॥ ਚਿੰਤੀ ਸੁਖ ਸੁਖਿ ਕਾਧੈ ॥
 ਚਿੰਤੀ ਸੁਖ ਸੁਖਿ ਕਾਧੈ ॥ ਚਿੰਤੀ ਸੁਖ ਸੁਖਿ ਕਾਧੈ ॥ ਚਿੰਤੀ ਸੁਖ ਸੁਖਿ ਕਾਧੈ ॥
 ਚਿੰਤੀ ਸੁਖ ਸੁਖਿ ਕਾਧੈ ॥ ਚਿੰਤੀ ਸੁਖ ਸੁਖਿ ਕਾਧੈ ॥ ਚਿੰਤੀ ਸੁਖ ਸੁਖਿ ਕਾਧੈ ॥
 ਚਿੰਤੀ ਸੁਖ ਸੁਖਿ ਕਾਧੈ ॥ ਚਿੰਤੀ ਸੁਖ ਸੁਖਿ ਕਾਧੈ ॥ ਚਿੰਤੀ ਸੁਖ ਸੁਖਿ ਕਾਧੈ ॥
 ਚਿੰਤੀ ਸੁਖ ਸੁਖਿ ਕਾਧੈ ॥ ਚਿੰਤੀ ਸੁਖ ਸੁਖਿ ਕਾਧੈ ॥ ਚਿੰਤੀ ਸੁਖ ਸੁਖਿ ਕਾਧੈ ॥

ॐ

[illegible]

महेश्वरः ॥ १५ ॥

महेश्वरः ॥ ०५ ॥ सिद्धाय ॥ ०६ ॥ रंसाव भुव ॥ ०७ ॥ उरुनमः ॥ ०८ ॥
सिद्धाय ॥ ०९ ॥ वामदेवः ॥ १० ॥ विव भवमः ॥ ११ ॥
गुह्याय ॥ १२ ॥ गिह्य ॥ १३ ॥ विपुत्राय ॥ १४ ॥ भवविह
विपुत्राय ॥ १५ ॥ विपुत्राय ॥ १६ ॥ परमेश्वरः ॥ १७ ॥
समेश्वरः ॥ १८ ॥ विमनः ॥ १९ ॥ विमनः ॥ २० ॥ सु
विमनः ॥ २१ ॥ विमनः ॥ २२ ॥ विमनः ॥ २३ ॥
विमनः ॥ २४ ॥ विमनः ॥ २५ ॥ विमनः ॥ २६ ॥
विमनः ॥ २७ ॥ विमनः ॥ २८ ॥ विमनः ॥ २९ ॥
विमनः ॥ ३० ॥ विमनः ॥ ३१ ॥ विमनः ॥ ३२ ॥
विमनः ॥ ३३ ॥ विमनः ॥ ३४ ॥ विमनः ॥ ३५ ॥
विमनः ॥ ३६ ॥ विमनः ॥ ३७ ॥ विमनः ॥ ३८ ॥
विमनः ॥ ३९ ॥ विमनः ॥ ४० ॥ विमनः ॥ ४१ ॥
विमनः ॥ ४२ ॥ विमनः ॥ ४३ ॥ विमनः ॥ ४४ ॥
विमनः ॥ ४५ ॥ विमनः ॥ ४६ ॥ विमनः ॥ ४७ ॥
विमनः ॥ ४८ ॥ विमनः ॥ ४९ ॥ विमनः ॥ ५० ॥
विमनः ॥ ५१ ॥ विमनः ॥ ५२ ॥ विमनः ॥ ५३ ॥
विमनः ॥ ५४ ॥ विमनः ॥ ५५ ॥

सं.
११

[illegible]

[illegible]

三

७३

ति कुलविनमः कए कय॥ ति कुंभनमः कए सुदुयकए॥
ति उवुमपय विमूक भकनव यमिमि उवैमः पुनरपय ३
ति उवुमप उवुमः कए॥ ति उः पुन मि॥ ति उः पुन
मि॥ ति उः पुन कय॥ ति उवुमः सुनु॥ ति उः पुन
विमूक विमूक विमूक भवः नवमेव विमूक नवमेव विमूकः॥
ति उवुमः कए॥ विमूक विमूक विमूक मि॥ विमूक विमूक विमूक
विमूक विमूक विमूक विमूक मि॥ विमूक विमूक विमूक विमूक॥
उवुमः सुनु॥ ति विमूक विमूक विमूक विमूक विमूक विमूकः॥
कलविनमः॥ कलविनमः॥ कलविनमः॥ कलविनमः॥
नमः॥ कलविनमः॥ कलविनमः॥ कलविनमः॥ कलविनमः॥

(Faint handwritten Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side)

新

[illegible]

०३
 १
 २
 ३
 ४
 ५
 ६
 ७
 ८
 ९
 १०
 ११
 १२
 १३
 १४
 १५
 १६
 १७
 १८
 १९
 २०
 २१
 २२
 २३
 २४
 २५
 २६
 २७
 २८
 २९
 ३०
 ३१
 ३२
 ३३
 ३४
 ३५
 ३६
 ३७
 ३८
 ३९
 ४०
 ४१
 ४२
 ४३
 ४४
 ४५
 ४६
 ४७
 ४८
 ४९
 ५०
 ५१
 ५२
 ५३
 ५४
 ५५
 ५६
 ५७
 ५८
 ५९
 ६०
 ६१
 ६२
 ६३
 ६४
 ६५
 ६६
 ६७
 ६८
 ६९
 ७०
 ७१
 ७२
 ७३
 ७४
 ७५
 ७६
 ७७
 ७८
 ७९
 ८०
 ८१
 ८२
 ८३
 ८४
 ८५
 ८६
 ८७
 ८८
 ८९
 ९०
 ९१
 ९२
 ९३
 ९४
 ९५
 ९६
 ९७
 ९८
 ९९
 १००

श्रीं ह्रीं क्लीं तं भोः तं ह्रीं श्रीं भोः तं क्लीं ह्रीं श्रीं
 श्रीं भाया भस्व वाणी धरा गुहा मिवाधिया करिधिया त्रिकुण्मा धरा वाणी भवेत्तव भाया लक्ष्मी भक्तरीरा
 भक्तरीरा धेनुमी धरा ॥ ॐ त्रिदीविष्टा भवेत्तवः ॥ त्रिकुण्मा ॐ त्रि॥ कायं नंदी कनकलक्ष्मी भक्तरीरा ॥

[illegible]

30

[illegible]

[illegible]

कनक १ उवाच वदन् मम कलमने रघुनाथ १ परम कान
 लिके सावति मजा ठैरवतु पठागि लि तिस सवने विमि तु मकल
 मनु मनुः १ पुन उवाच वदन् लै रे वि मजा कानि काल वसि वि
 नुनं नु १ मी मी म न न न न न न न न न न १ म न न न न न न न न न न
 मी न न न न न न न न न न १ म न न न न न न न न न न १ म न न न न न न न न न न
 पुन १ परम कानि वि हन १ विवाण म न न न न १ विधम
 प न न न न न न न न न न १ म कल नु रि तु रि तु न न न न न न न
 क व १ म न प न न न न न न न न न न १ म कल न न न न न न न
 न न न १ पुन १ पुन १ य म न न न न न न न न न न न न न न न न न न
 न
 म न

सं.
 ३३

लियामङ्गुं कर्मं दिक्कुलपङ्क्तु
 मन्त्रं भृङ्गसपथनं वरमणीति ॥
 पङ्क्तुं भृङ्गसपथनं वरमणीति ॥
 धरिदगिङ्गु ससिपङ्गु भृङ्गसपथनं

सुषुप्ता ॥ त्रिगंभीरः विजुष्टा ठगवैष्टुष्टा ॥ ००३ ॥ गं ह्र ॥ गी सिर ॥ गुं मिया ॥ गै कय ॥ गों वेरे ॥ गः सुदुः ॥

+

ति धन पित्रुं भूमिं विवृतं सुल्लस मल्ल कमलस
पद्म ॥ कं रं सुतुष्टिः भुं वदनी भगवुं मिहिकं री
नमामि ॥ भुल ॥ त्रिगंभीरः विजुष्टा ठगवैष्टुष्टा ॥ ००३ ॥ +
भं ह्र ॥ गी सिर ॥ गुं मिया ॥ गै कय ॥ गों वेरे ॥ गः सुदुः ॥
पुल्ल ॥ पुत्र ॥ सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा
भीव धन भगवैष्टुष्टिः विजुष्टा मल्ल दिष्ट ॥ भुल ॥ त्रिगंभीरः
गीरः गङ्गा टैष्टुष्टा ॥ गं ह्र ॥ गी सिर ॥ गुं मिया ॥ गै कय ॥
गों वेरे ॥ गः सुदुः ॥ पुल्ल ॥ पुत्र ॥ गङ्गा सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा
नधन सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा
कुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा
वर्ग सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा
गङ्गा सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा सुदुष्टा ००३ ॥

示
34

[illegible]

[illegible]

子

[illegible]

१ पुनः॥ तिष्ठत्येवमुपपत्तिं भवन्तीति सैकाग्रभावः॥ पञ्चपञ्चमसमुत्पत्तिं विवक्षितं॥
 मयिष्ठान्तविठम्भम् भवन्तीति मयिष्ठकम्॥ पञ्च वाच्यवन्तीति मयिष्ठपञ्चमेवम्॥

मयिष्ठपञ्चमसमुत्पत्तिं

भवन्तीति मयिष्ठपञ्चमसमुत्पत्तिं॥ पञ्चपञ्चमसमुत्पत्तिं विवक्षितं॥
 मयिष्ठान्तविठम्भम् भवन्तीति मयिष्ठकम्॥ पञ्च वाच्यवन्तीति मयिष्ठपञ्चमेवम्॥
 मयिष्ठपञ्चमसमुत्पत्तिं॥ पञ्चपञ्चमसमुत्पत्तिं विवक्षितं॥
 मयिष्ठान्तविठम्भम् भवन्तीति मयिष्ठकम्॥ पञ्च वाच्यवन्तीति मयिष्ठपञ्चमेवम्॥
 मयिष्ठपञ्चमसमुत्पत्तिं॥ पञ्चपञ्चमसमुत्पत्तिं विवक्षितं॥
 मयिष्ठान्तविठम्भम् भवन्तीति मयिष्ठकम्॥ पञ्च वाच्यवन्तीति मयिष्ठपञ्चमेवम्॥

सं. वकापगपप ७ मयिष्ठपञ्चमसमुत्पत्तिं विवक्षितं॥ पञ्चपञ्चमसमुत्पत्तिं विवक्षितं॥
 ३३ मयिष्ठपञ्चमसमुत्पत्तिं विवक्षितं॥ पञ्चपञ्चमसमुत्पत्तिं विवक्षितं॥

पञ्चपञ्चमसमुत्पत्तिं विवक्षितं॥ पञ्चपञ्चमसमुत्पत्तिं विवक्षितं॥
 मयिष्ठपञ्चमसमुत्पत्तिं विवक्षितं॥ पञ्चपञ्चमसमुत्पत्तिं विवक्षितं॥

मयिष्ठपञ्चमसमुत्पत्तिं विवक्षितं॥ पञ्चपञ्चमसमुत्पत्तिं विवक्षितं॥
 मयिष्ठपञ्चमसमुत्पत्तिं विवक्षितं॥ पञ्चपञ्चमसमुत्पत्तिं विवक्षितं॥

४. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कालमेव निरुद्धं सर्वं लोकेषु भवेत् ॥
गुणमवाप्स्यते भवतु मे ॥ १ ॥

[illegible]

धृष्टिर्कल्पानिहंसानुं उतिप्रसुपति
 भवराजकर्मभूते ॥ प्रणमः ॥

(उगसिमुट्टैभक्तनिष्ठंभूगै॥ भुलभा ॥ १
उदुर्ध्वगामुष्टवभा ॥

子

三

39

उत्तमं कदाचन ॥ उत्तमं ॥ उत्तमं वरका योऽपि किंचित् ॥
धर्मीकृतिः ॥ समस्तं गतं नमः पूजितं च धर्माय नमः ॥
विष्णुं च समकालः विष्णुं कलायं ॥ धर्माय नमः ॥
सर्वमिवरकं मेवमिच्छाम ॥ ३॥ विष्णुं च समकालः
विष्णुं कलायं ॥ धर्माय नमः ॥ उत्तमं वरकं मे
वमिच्छाम ॥ ३॥ विष्णुं च समकालः विष्णुं कलायं
॥ धर्माय नमः ॥ भक्तोऽपि वरकं मेवमिच्छाम ॥ ३॥
एवं ज्ञेयं पश्य वरकं ॥ ३॥ समिपु वरकं ॥ कुट्ट
गवः ॥ ३॥ समिपु वरकं ॥ ३॥ पुनरिव ॥ ३॥ उत्तमं वरकं ॥ ३॥
सर्वमिवरकं ॥ ३॥ कलमिव ॥ ३॥ भक्तो वरकं ॥ ३॥ भक्त
वीरिव ॥ ३॥

[illegible]

五

१०

[illegible]

九

۱۱

ॐ भगवति नमः ॥ वरुण ॥ ॐ भगवत् ॥ धूम्र ॥ ॐ भगवति ॥
 धूम्र ॥ ॐ भगवत् ॥ सुवर्ण ॥ ॐ भगवति ॥ सवित्र ॥ ॐ भगवत् ॥
 वसव ॥ ॐ भगवति ॥ उग्र ॥ ॐ भगवत् ॥ सुवर्ण ॥ ॐ भगवति ॥
 सुवर्ण ॥ ॐ भगवत् ॥ सुवर्ण ॥ ॐ भगवति ॥ कर्ण ॥ ॐ भगवत् ॥
 मंम ॥ ॐ भगवति ॥ वामदेव ॥ ॐ भगवत् ॥ सुवर्ण ॥ ॐ भगवति ॥
 सुवर्ण ॥ ॐ भगवत् ॥ सुवर्ण ॥ ॐ भगवति ॥ वामदेव ॥
 मंम ॥ ॐ भगवत् ॥ सुवर्ण ॥ ॐ भगवति ॥ निवर्ण ॥ ॐ भगवत् ॥ सवित्र ॥
 ॐ भगवति ॥ सवित्र ॥ ॐ भगवत् ॥ धूम्र ॥ ॐ भगवति ॥
 सुवर्ण ॥ ॐ भगवत् ॥ वामदेव ॥ ॐ भगवति ॥ वामदेव ॥
 सुवर्ण ॥ ॐ भगवत् ॥ सवित्र ॥ ॐ भगवति ॥ सुवर्ण ॥ ॐ भगवत् ॥
 सुवर्ण ॥

मं भगलिहै॥ सिधायं॥ ॐ भगु॥ ननुलीधु॥ ॐ भगलिहै॥
 ननुयै॥ नं भगु॥ वाम ननु॥ नं भगलिहै॥ ननु ननु॥
 ॐ भगु॥ वाम ननु॥ ॐ भगलिहै॥ ननु वनु॥ ॐ भगु॥
 वाम ननु॥ ॐ भगलिहै॥ वाम ननु॥ नं भगु॥ ननु वनु॥
 ॐ भगलिहै॥ ननुयै॥ नं भगु॥ ननु पनु॥ ननु ननु॥
 ॐ भगलिहै॥ वाम ननु॥ नं भगु॥ ननु पनु॥ नं भगलि॥
 ननु ननु॥ ॐ भगु॥ ननु ननु॥ नं भगलिहै॥ ननुयै॥
 ॐ भगु॥ ननु विनु॥ नं भगलिहै॥ ननु ननु॥ नं भगु॥
 वाम ननु॥ ननु ननु॥ ॐ भगलिहै॥ वाम ननु॥ ननु ननु॥
 नं भगु॥ वाम ननु॥ नं भगलिहै॥ ननु ननु॥
 ननु॥ नं भगु॥ वाम ननु॥ नं भगलिहै॥ ननु ननु॥

सं.
 ७७

ॐ भ्रातृ॥ वामदेवदेव॥ ॐ भ्रातृ॥ सदाशिव॥ ॐ भ्रातृ॥
वामदेवदेव॥ ॐ भ्रातृ॥ ललाटेन॥ ॐ भ्रातृ॥ सदाशिव
लिवापि॥ ॐ भ्रातृ॥ धामदेव॥ ॐ भ्रातृ॥ सदाशिव
ॐ भ्रातृ॥ सदाशिव॥ ॐ भ्रातृ॥ सदाशिव॥ ॐ भ्रातृ॥ सदाशिव॥
ब्रह्मदेव॥ ॐ भ्रातृ॥ सदाशिव॥ ॐ भ्रातृ॥ सदाशिव॥
ॐ भ्रातृ॥ सदाशिव॥ ॐ भ्रातृ॥ सदाशिव॥ ॐ भ्रातृ॥
सदाशिव॥ ॐ भ्रातृ॥ सदाशिव॥ ॐ भ्रातृ॥ सदाशिव॥
ॐ भ्रातृ॥ सदाशिव॥ ॐ भ्रातृ॥ सदाशिव॥ ॐ भ्रातृ॥
वामदेवदेव॥ ॐ भ्रातृ॥ सदाशिव॥ ॐ भ्रातृ॥ सदाशिव॥
सदाशिव॥ ॐ भ्रातृ॥ सदाशिव॥ ॐ भ्रातृ॥ सदाशिव॥
ॐ भ्रातृ॥ सदाशिव॥ ॐ भ्रातृ॥ सदाशिव॥ ॐ भ्रातृ॥

九

तिंहीहींहींहीं ॐ वंहीरि सभकसु पुने उगगपुपुपुपुपु
 कलपुनगपुपु मेरिनि हींहींहींहीं के निनिनिनि ॥ उति
 नष्टातु ॥ तिंहीं हींहींहीं ॐ नदि उवुकमि सभकसु पुने
 उगगपुपुपुपु विष्टातुनगुगगपुपु मेरिनि हींहींहींहीं के
 निनिनिनि ॥ उति कठपुपुपुपु तिंहींहींहींहीं ॐ नदि
 विकगले सभकसु पुने सभकसु पुने वायुपुपु मेरिनि हींहीं
 हींहीं के निनिनिनि ॥ उति उगगपुपुपु ॥ तिंहींहींहींहीं
 ॐ नदि मेरि सभकसु पुने सभकसु पुने वायुपुपु मेरि
 नि हींहींहींहीं के कलकलकल के निनिनिनि ॥ उति ॐ
 सभकसु मेरि मेरि ॥ यद्यः ॥ ॐ वं ॐ ॐ ॐ ॥ उति पदक
 लपुपुपु ॥ उति पदक पदक पदक पदक पदक ॥ २ ॥

उगग +
 पुपुपु

उतिमव
 पुपुपु ०

उगगपुपुपु

[illegible]

७५

ति ॥ विषीतुगति ॥ ५३ ॥ सुगच्छ ॥ १२ ॥ त्रिषू ॥ १३ ॥ भविषु ॥ १४ ॥ भवि
 नेहूठव ॥ १५ ॥ ठगववमेनु ॥ १६ ॥ विषीतुगति ॥ ५३ ॥ सुगच्छ ॥ १२ ॥ त्रिषू ॥ १३ ॥ भवि
 ल वमः ॥ १७ ॥ सुगच्छ ॥ १२ ॥ त्रिषू ॥ १३ ॥ भवि ॥ १४ ॥ भवि
 भमलठवभगु ॥ १५ ॥ सुगच्छ ॥ १२ ॥ त्रिषू ॥ १३ ॥ भवि ॥ १४ ॥ भवि
 गलल ॥ १५ ॥ सुगच्छ ॥ १२ ॥ त्रिषू ॥ १३ ॥ भवि ॥ १४ ॥ भवि
 सागभदिठववमः ॥ १६ ॥ त्रिषू ॥ १३ ॥ भवि ॥ १४ ॥ भवि
 सुगच्छ ॥ १२ ॥ त्रिषू ॥ १३ ॥ भवि ॥ १४ ॥ भवि
 धनुष ॥ १५ ॥ सुगच्छ ॥ १२ ॥ त्रिषू ॥ १३ ॥ भवि ॥ १४ ॥ भवि
 भुल्लः ॥ १६ ॥ सुगच्छ ॥ १२ ॥ त्रिषू ॥ १३ ॥ भवि ॥ १४ ॥ भवि
 काणे ॥ १७ ॥ सुगच्छ ॥ १२ ॥ त्रिषू ॥ १३ ॥ भवि ॥ १४ ॥ भवि
 ५३ ॥ सुगच्छ ॥ १२ ॥ त्रिषू ॥ १३ ॥ भवि ॥ १४ ॥ भवि
 सुगच्छ ॥ १२ ॥ त्रिषू ॥ १३ ॥ भवि ॥ १४ ॥ भवि

॥ ०३ ॥ ०
 ॥ ०३ ॥ ०
 ॥ ०३ ॥ ०
 ॥ ०३ ॥ ०
 ॥ ०३ ॥ ०
 ॥ ०३ ॥ ०
 ॥ ०३ ॥ ०
 ॥ ०३ ॥ ०
 ॥ ०३ ॥ ०
 ॥ ०३ ॥ ०

सुगच्छ ॥ १२ ॥ त्रिषू ॥ १३ ॥ भवि ॥ १४ ॥ भवि

[illegible]

॥ ॐ ॥

[illegible]

ति वायुगुणिये गंवर ॥ पाहं गलना वसः ॥ सुगुं गलना
 मुका ॥ सुममवीयं गलना मुता ॥ ममालठव सुगु ॥
 मसुगुय विगलना विषय ॥ पुपंगलना कुंठ ॥
 सीपंगलना विषय ॥ ठगवद्विपना मनिठववः ॥
 ति वायुगुं मीयगमि मुका ॥ ०३ ॥ ति वायुगुणिये पगुये गं
 मुगय मुका ॥ ०३ ॥ पुला ॥ ति कुंयं सुगुका गः मधन
 पु वायुगुगुनु रीतु मुका ॥ ति सुगु मवेमं मुका गः मपुलाः
 मनुविषय ॥ ति ठेः गंवरगुयावमु सुगुका गः निः निव
 सुया ५ विवः ५ कगुये यतुः पलमवामयम ॥ ति सु
 कसगुगुणिये मना सिवगगु ९ मविषु ९ मविषु ९
 मविनेरु ठव ९ ममगुीकगमिवनः ॥ सुकसगुगुणिये ९

सं.
 ७१

[illegible]

५७

तिङ्गिन्नीं दें उं गंवि सुभकसुत्रे उतापुष्टा पुंतिभू
कलातुनता पुंमोविङ्गिन्नीं दें केगलिनिभूत॥
तिङ्गिन्नीं दें उं मेवि तुष्टके मि सुभकसुत्रे उतापुष्टा
पु विष्टातुनता उतापुष्टा मेविङ्गिन्नीं दें केगलिनिभूत॥
तिङ्गिन्नीं दें उं मेवि विकराले सुभकसुत्रे उतापुष्टा पु
मातुतुनता वायुतु मेविङ्गिन्नीं दें केगलिनिभूत॥
तिङ्गिन्नीं दें उं मेवि मेभू सुभकसुत्रे मातुतुनता
सुकासतु मेविङ्गिन्नीं दें केगलिनिभूत॥ उं
पानुक लेष्टा मेभूतः॥ ति उतापुष्टा पुंतिभू॥ तिङ्गि सुभक
ले उतापुष्टा मेभूतः॥ ति उतापुष्टा पुंतिभू॥ मेभूतः
पुंतिभूतः॥ ०॥ उतापुष्टा॥

उतापुष्टा
पुंतिभू

赤

सुश्रुतः॥ यिष्टः॥ मिष्टः॥ +

मणिपुत्रं नमः॥ नैव तु यत्तु विष्णुः॥ वायुपुत्रं गुरुमु॥ भव
 पवित्रीयुतुष्टुष्टुः॥ ७॥ ७॥ यमः॥ संपां धतुः॥ मेमः॥
 मन्त्रः॥ विष्णुः॥ पुत्रव्याः॥ पण्यगन्धः॥ भूतः॥
 सुदः॥ सानुकः॥ पिलपिष्टुः॥ मित्रव्याः॥ यमव्याः॥
 सुदः॥ पितुः॥ मित्रव्याः॥ मित्रव्याः॥ मित्रव्याः॥
 नमः॥ कविः॥ एवं मन्त्रं मन्त्रं पुत्रव्याः॥ ७॥ मित्रव्याः॥
 भवः॥ मणिपुत्रं॥ मन्त्रं॥ मन्त्रं॥ मन्त्रं॥ मन्त्रं॥
 एवं मन्त्रं॥ ७॥ विष्णुः॥ गुरुमु॥ सुदः॥ ७॥ यमः॥
 संपां धतुः॥ मेमः॥ मन्त्रः॥ विष्णुः॥ पुत्रव्याः॥ पण्यगन्धः॥
 भूतः॥ भूतः॥ सुदः॥ सानुकः॥ पिलपिष्टुः॥ ७॥
 मन्त्रं॥ मन्त्रं॥ मन्त्रं॥ मन्त्रं॥ मन्त्रं॥

[illegible]

३७

यद्वा तुष्टा भवेत् कथं तस्मै भुवं सिधः ॥ ३३ ॥ भवत्येता
 तद्वा तुष्टा भवेत् सीमाताः मधुवां ह्येव सुगीविहं पठेयुः
 भवत्येता भवेत् ॥ सुभावावतुष्टा कथं पठेयुः ॥ सुभावा
 सुगीविहं ॥ त्रिंशत्तः सुभावा लंघः ह्येव सुगीविहं पठेयुः
 भवत्येता भवेत् सीमाताः पठेयुः दायुवावतुष्टा सुभावा
 त्रिंशत्तः पठेयुः लंघः भवत्येता भवेत् सीमाताः पठेयुः
 भवत्येता भवेत् सीमाताः पठेयुः लंघः भवत्येता भवेत् सीमाताः
 सुगीविहं ॥ त्रिंशत्तः सुभावा लंघः ह्येव सुगीविहं पठेयुः
 भवत्येता भवेत् सीमाताः पठेयुः दायुवावतुष्टा सुभावा
 त्रिंशत्तः पठेयुः लंघः भवत्येता भवेत् सीमाताः पठेयुः
 भवत्येता भवेत् सीमाताः पठेयुः लंघः भवत्येता भवेत् सीमाताः

वर्ग १/१

٥٠

[illegible]

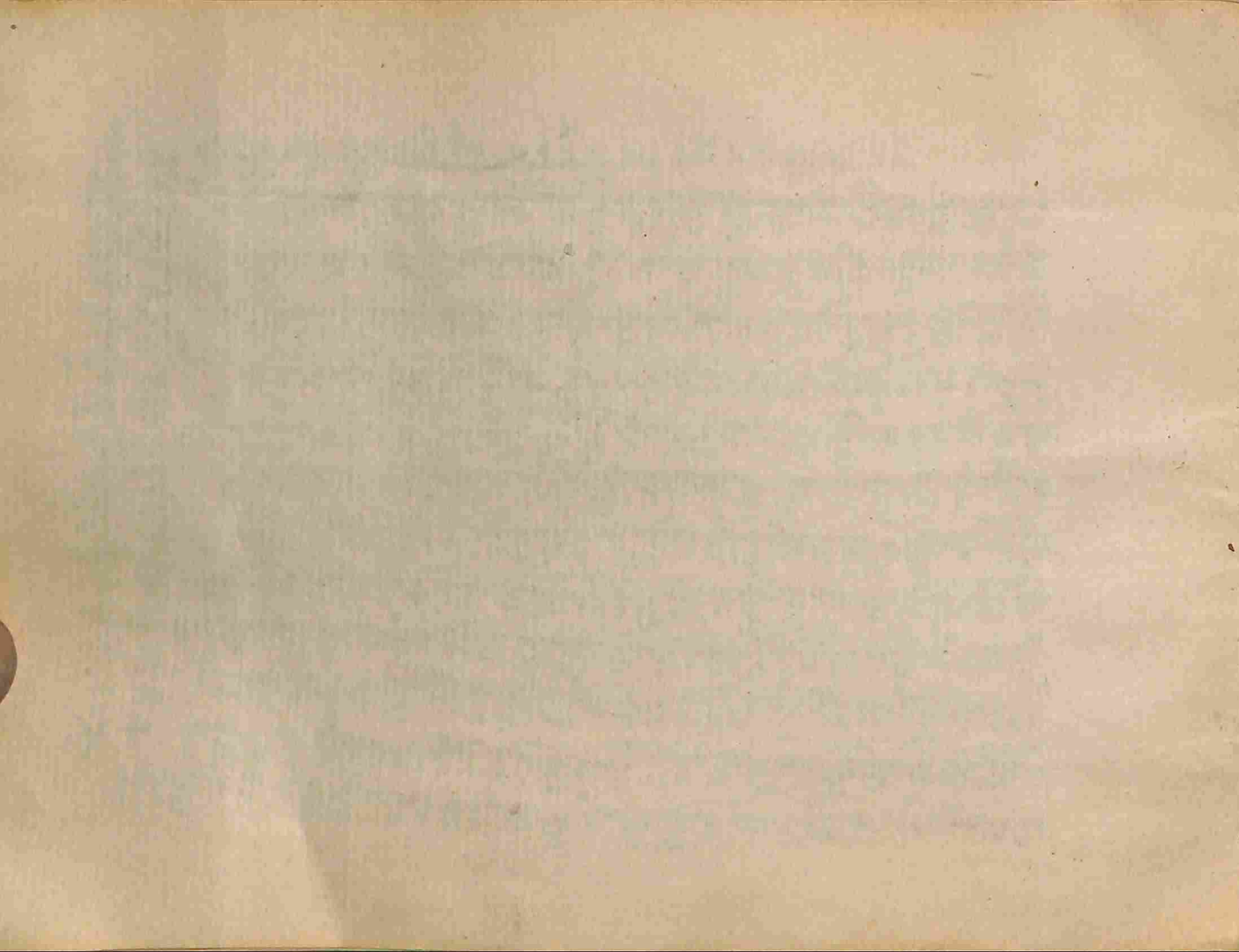
वं प्रिं लववय मिमययवेतु नृ नृ मं विना सिगुमिबुवैरा ५
 व उरैव मिवगिं वीडा विपरीतुमुन/ ३: परिमभुद ॥ कल
 ठैरवगिं परिमभुजमि ३ ॥ पदुवामि ३ ॥ परिमिदामि ३ ॥
 मुगनमिगं धमिभामुगनमिद ॥ उरिनिवमं मं प्रह ॥
 उ वरुतुपठैरवयवोपल मुग मुग ॥ ०३ ॥ उ हस ॥ वरुमि ॥
 तुपमिग ॥ ठैरवय कय ॥ वोपल वेरुह ॥ मुग मुग ससु ॥
 ठि हं मयमिदु वोपल मुग मुग ॥ ०३ ॥ हं हस ॥ हं मिग ॥
 हं मिग ॥ हं कय ॥ हं नेर ॥ हं ससु ॥ ठैरवगिं मं विमं व
 मजमुदिमं वरुवामुवामुद ॥ सिगुमपि ससिगं पमुव
 ससिगं ममुक सव मं मु ॥ उपरि वरुगमुद ॥ उरु
 उरु मयय ॥ ममु ॥ ठि उरु मजयेमुद ॥ ठि सिग मजये
 मुद ॥

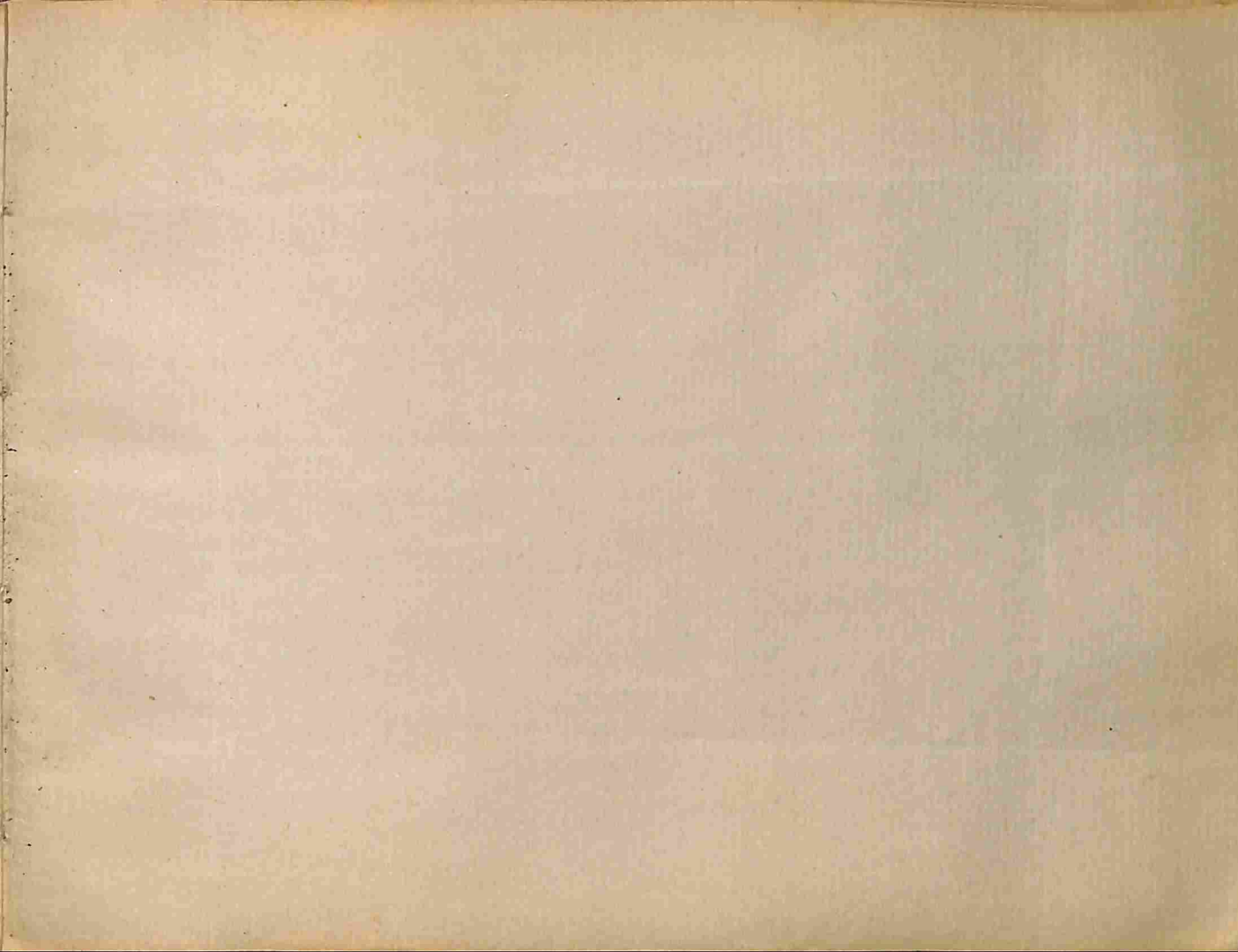
[illegible]

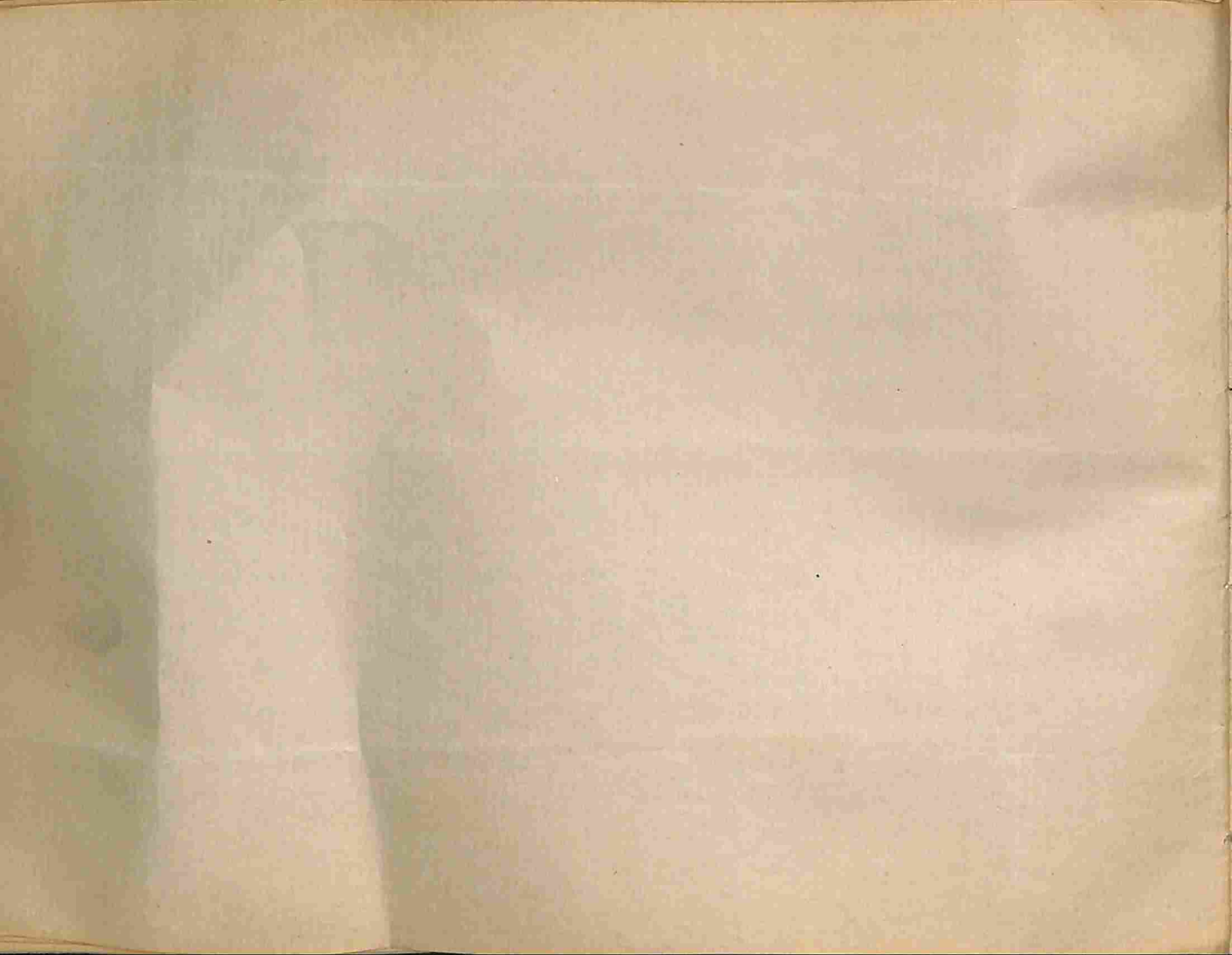
यमकुकरैः॥ सहस्रवत्॥ गगनयुतैः सावत्॥ स्रियुत
 मृगसु॥ वैद्युतयुतसु विष्णुः॥ पविषीयुतसु ब्रह्मः॥ वायुयुत०
 भृशसु॥ उरुसु यमसु संपादितः मेमसु सगुहाः विष्णुः
 प्रवृत्तः पद्मसु॥ मृगसु स्रुतः स्रुतसु पितृ
 पितामहसु॥ सिद्धसु देवतां॥ स्रुतसु स्रुतः स्रुतसु॥ मायामै
 वीनदितुसु स्रुतसु स्रुतसु॥ मन्त्रलक्ष्मीमदितुसु मन्त्रलक्ष्मी॥
 स्रुतसु म० ठीविल्लै॥ स्रुतसु म० कपालीमै॥ वाग्वीम०
 उरुसु॥ वैष्णवीम० स्रुतसु॥ कर्माग्रीम० स्रुतसु॥
 भादेवरीम० स्रुतसु॥ स्रुतसु मदितुसु मितुसु स्रुतसु॥ सु
 मद्रुसु ककुलसु ठीमगवसु स्रुतसु कर्माग्रीम०
 कर्माग्रीम० कर्माग्रीमसु स्रुतसु॥ कर्माग्रीम० स्रुतसु॥

सं.
 ०५

मयैलं भगवत्संगे ॥ भवत्युत्तमं भवत्तमं
उदरा ॥ ७ ठिरी उत्तमं भुजा ॥ ८ ठिरी उदरा ॥







समुकलमं हैगकलमं मजिकलमं॥

संमने भव सुग्रय

पाद्मगुणं नरके भुं॥

वृद्धकलमं



गद्यगीक. हैगक. समुक. मजुसंभुभा

संमने भव सुग्रय

मजिकलमं

*	*	*
*	*	*
*	*	*

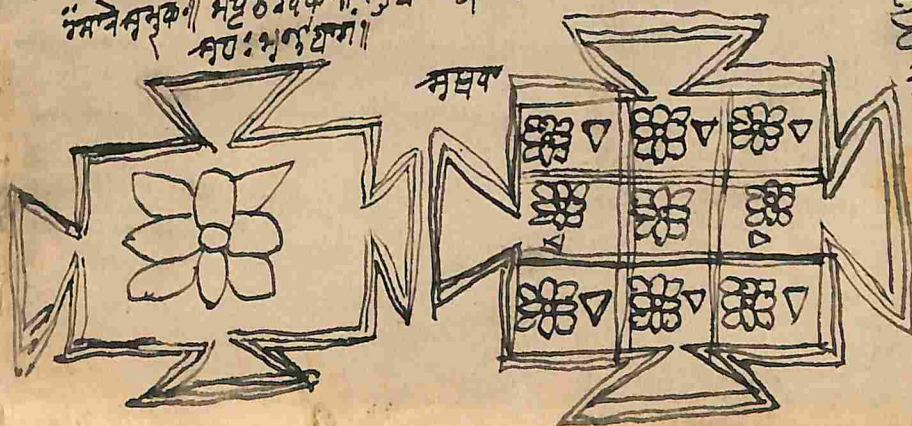
हृदिगलियनभा॥

संमने समुक॥ भव हैगक॥ सुग्रय मजिक॥ मजुसंभुभा॥

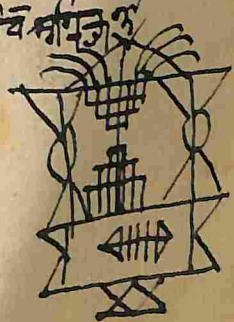
वैदिकक.

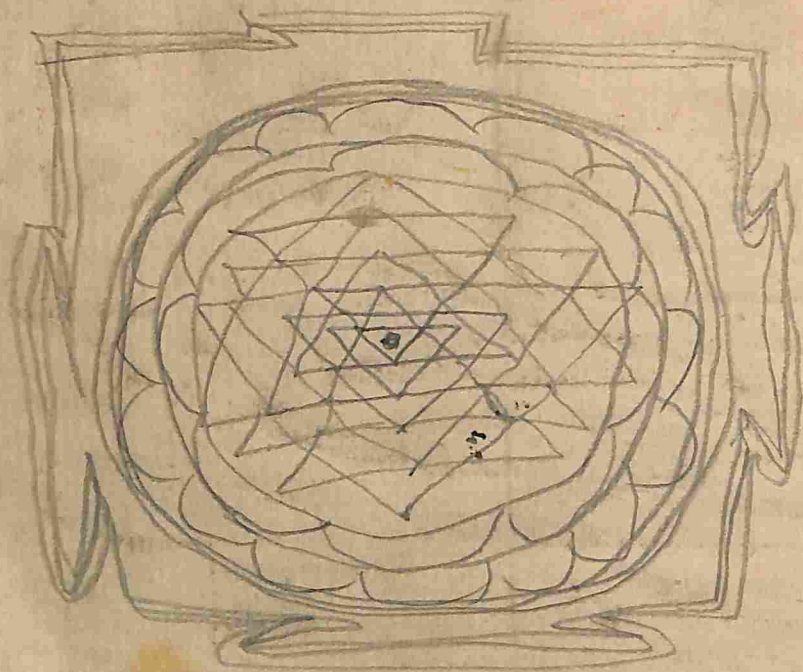
वैदिक मजु॥

संमने



संमने मजुसंभुभा





ॐ ३०	अक्ष १२	मिव ११	उदुभुवकु ०३	विगपी ००	निउंयमि ०३	होउीउंयम ११	वभमेवपु १०	भुलेउम ३०
नभिनभः ३०	मक्ष १३	मच ११	उंमानभवे ०१	मासुउय ००	पुनरुग ०३	मचविमु १०	विगपी ०३	विनभिनभः ३३
विमिवय ११	विनभिनभः १३	मच ११	मिवय ०१	मचभवे ०१	विनभिनभः ०३	विगपी ११	मेव १३	उदुउिउम ३३
ॐ १३	मुनमिउ ११	ममंमुउ १३	पुवय १३	हेमंमुपि १३	हेमंमुप १३	मुउप १३	ममेउन १३	हेमन १३
पिउ १०	उदुविमु १३	पचमिउ १३	मुनमिउ ३	वि ०	मचभवे १३	होउिः ३	परमम १३	मुपिन ३
पउ १०	ल १३	ममंमिउ १३	मनय १	मुनय १	मिवय १	उलः ३	मम ३	मुपिन ३
मचभवे १३	विगपी १३	ममं १३	ममंवेम १३	विग १३	विगमिउ १३	विगः १३	मुपम ३	ममं १३
मचभवे १३	ममंउलः १३	ममं १३	ममंवेम १३	मुनिग १३	मिव १३	विगः १३	मुपम ३	ममं १३
हवे १०	ल १३	मच १३	ममं १३	परमम १३	मच १३	विगः १३	मुपम ३	ममं १३

भुक्तु ०८

अवि ७३३३०

० सुसदेरागवयुत मुसावमु ००३३:						सुये भुक्तुयुत नव २७ विमदा: ००
मिलिपिक्तु ०१ उतु मेममु ७		भुक्तु युतमु	अवि ७३३३० ५१ वृक्तु ००:			समिल यममु १ सवक्तु: ०५
वयि वयुवुतु मेम मु ०१५५५५५५:						वैक्तु सल यतु विक्तु: ७ अगवदा: ०९
०३	अवि मे सपं पतु: ३१ सावक्तु ००					

कर्मगण ०१
 देवकाय ०
 सुभक्तकाय ०

सकलपद ००
 जलसुगण ०

विभक्तकाय ००
 ककुलाय १

सुविदितनाय ००
 वीमगण १

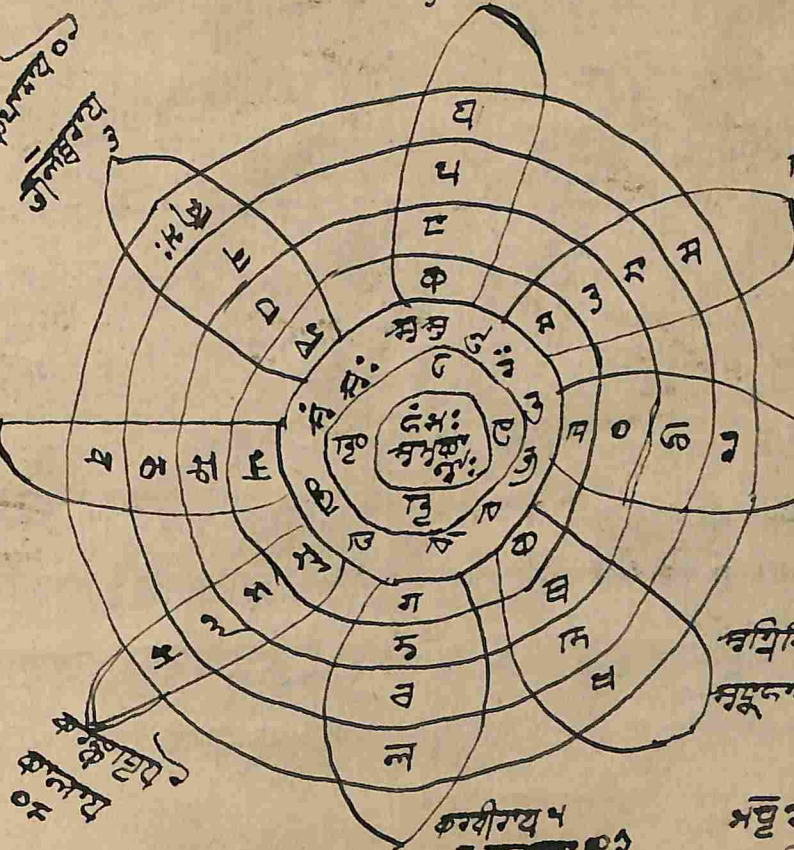
सुविदितनाय ०१
 सुभक्तकाय २

भट्टगण ००
 व वीमगण ००

कर्मगण ५
 देवकाय ०३
 सुभक्तकाय ०३

कर्मगण ००
 कर्मगण ००

कर्मगण ००
 कर्मगण ००



सः ॥ निरूपयन् कः ॥ उदितः ॥ सुतोपसुपासकं पिष्टमयं जहता ॥
यथा ॥ पूतवाकः ॥ ० ॥ पूतमासः ॥ ९ ॥ पूतपुत्रः ॥ ३ ॥ पूतकुमिपः ॥ ८ ॥
पूतदत्तः ॥ ५ ॥ गन्धर्वपुत्रं मन्त्रं धूममसिगमिचुमता विगीयं
नेष्टेष्टु वामजले उगीयकमा ॥ सत्तुतु उद्वानाठे धानुमपमये
तुमेता ॥ उद्वानाठः ॥ एकतुष्टुमैष्टुपुनिकः ॥ मन् ॥ यवपिष्टमयं धानु
धुनिकं ठा ॥ गन्धर्वपुत्रं मन्त्रं ॥ पूतवाकः ॥ ० ॥ पूतमासः ॥ ९ ॥
पूतपुत्रः ॥ ३ ॥ पूतकुमिपः ॥ ८ ॥ पूतदत्तः ॥ ५ ॥ मन्त्राणाम् गन्धर्वपुत्रं ॥
यन्त्रं ॥ सत्तुतु ॥ धूममः ॥ कादः ॥ पश्चिन्नामृष्टवधुताः ॥ यवपिष्ट
नानुलिपुत्राणि मन्त्राणाम् मन्त्राणि ॥ धूममः ॥ पूतवाकः ॥ सिगमि ॥
उद्वानाठः ॥ सुमेष्टु ठावन्त्रं धूममः सुमा यन्त्रं विमत्तु वीद्वाना
तुपमेष्टु वीद्वाना मा विमत्तु मन्त्रं मन्त्रं माधुमा माधुमा मीतः ॥ ० ॥
मन्त्राणाम् उद्वानाठः ॥ उद्वानाठः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ १ ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥ मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सज्जनाः ॥ १ ॥
अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदो वीर्यवान्पुत्रः ॥ द्रुपदो वीर्यवान्पुत्रः ॥ २ ॥
सत्तु पुत्रकुम्भिये वीर्यवान्पुत्रः ॥ ३ ॥ अर्जुन उवाच ॥ ४ ॥
राहुं हृष्टं कुरुक्षेत्रे युधिष्ठिरः ॥ ५ ॥ अर्जुन उवाच ॥ ६ ॥
पुमानं परिप्राक विभुः ॥ ७ ॥ अर्जुन उवाच ॥ ८ ॥
अथ गच्छेत्तु नः ॥ अथ गच्छेत्तु नः ॥ ९ ॥
उत्तमं धर्मं कुरुक्षेत्रे ॥ १० ॥ अर्जुन उवाच ॥ ११ ॥
उत्तमं धर्मं कुरुक्षेत्रे ॥ १२ ॥ अर्जुन उवाच ॥ १३ ॥
उत्तमं धर्मं कुरुक्षेत्रे ॥ १४ ॥ अर्जुन उवाच ॥ १५ ॥
सर्वं धर्मं कुरुक्षेत्रे ॥ १६ ॥ अर्जुन उवाच ॥ १७ ॥
धर्मं कुरुक्षेत्रे ॥ १८ ॥ अर्जुन उवाच ॥ १९ ॥

